15 MS.

1. Rach...
2. ... " "
3. " "
4. " "
5 " "
6 " "
ETC. ETC.

1404

... Dass.
5. Sarig Ram
6. Basant Rai.

[illegible] ... ant Ram

Bhajan (Bhakti Ras)

१२

॥राग विहाग॥

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ भजन लिख्यते॥

श्री गुरु झूलत बनै ठबबी राजैं बन मैं वा
के चरनन मैं चित लग्या बध्या न धरम न मैं
॥टेक॥ स्याम बरन वा की मूरत सूरत हा
म सर फर मै मोतीयों की माल सुंदर व
शाल को ई पटी रहत उर मै॥ टेक॥ बन्यो
एक ही राम सत ग मै मानो चंद्र किरन धु

पहुची

वधुवदीक स म जा।यौ तुरत सेत घन स॥
टेक॥इंद्र दीक जा को पार न पावै,प्र।पनी
वंत व न मै,प्रे सी माधुरी मुरत सौ ध्यान
धरत है मुक्त होसी दीन मै॥टेक॥वनी दो
॥उँह्रायन मै मानो मही रनै।मा ह्वाक वर
नजलम अन्वी तक रदीन मै॥टेक।धस्ती

2

धि वाके हारै रहत है॥ सुंदर मंदर मैं मौ

मे मौ सास पर छत्र बि॥ राजै मोतीयो

दी माल गलत मै॥ टेक॥ वने दोउ कुंडल कौ

नो मै मानो प्रीतम॥ जो मरी माहि म मे हाव

रस गा यो बि॥ जली चमकत घन मै॥ टेक॥

महारस घन बन कुं जत होलै॥ मोरनबत

॥ सोरठा ॥

वनमैं तुम वही चलौ विद्याधर पा
रे चट कलगी नैनमैं ॥ ग्राम में दलव
तदेव वी राज वृजमैं ॥ श्रीरामजी ॥ जव
गहराज सभामैं आनी ॥ द्रोपद सुता पटची
रहरनकौं दुसासन प्रभमानी ॥ ठाके हु सनूं कुरजो का
धन शोवत ज्ञा पद्य रानी वज्र परौ याराज

समामै दैयप्रजाप्रकुलानी॥ चहूदीसदेख
त कोउ नहि दे खत, प्रतसमीत, प्रकुलानी
हेजदु नाथ कमल दल लोचन कमना
सुखदानी॥ गरुड चढे नंदनंदन, प्राए
देखे सभ हरयानी॥ सूरदास याकु
नी पतते राखल ई जग जानी॥ जवग
हराज सभामै प्रानी॥ श्री नाथ जी सहाय॥

॥ विहग ॥

प्रान परी मो पै भीर हू मारी सुधली जौ वंसी वारे ॥ प्रं
धकौ बंध [illegible] दुष द्रु सासन नगन करत है
सरीर ॥ प्रर जन भीम भ हा वल जाधाको उ नधरत
हां धीर ॥ मात कौ ति निरष बधु कौ, प्रांस नभर, प्रा ए नी
र ॥ सूर दास सहाय करो हर मेरी, प्रबै ॥ वढा दि यो चीर
॥ प२ ॥ ता ॥
॥ प्रभा सीताराम जी ॥ प्रभा क्रम जी कौ ध्यान मेरा नित सादना
री माई ॥ मन के म हल पीत कुं त जागै जादो राई ॥ सां

वरेवरन कोमल चरन नैसै दै बैचक चौंधी होत या
यन उपर नुपुर वीधना नै वनाई॥ दाहिन पाव प
द मयाते टै ठौक र धरन,प्राली,प्रैसे चरन दुख के
हरन है सदा सुषदाई॥ वाजू वंद पोंहची भु जा
न ब कौ चमत कार प्रसन, प्रधर सस सूरन भुष ल
भावजाई। कमल नयन कुंडल कलजा वा प्रत
विंव होत,प्रानद कौ कंद मा नौर होरी भुकाई॥

नौ

लालिइजार बंधकंचन के तोरै सखी काछनी पचरं

ग ऊपर किंकनी छबि छाई॥ बनमाला मुक्तमाल कं

ठ बनी कोमन भावन पी॥ ताव र चट क देख दामनी

ल जाई॥ मोर मुकट टंकु इल लटकै घुघर वारी

फूल सजल कचिपै चंदन खोर उमग चली सुंदर

रताई॥ कहै भगवान हीत रामसखी मईनी हाल

श्री गोपाल श्री गोपाल रसना रट लाई॥ श्री कृष्ण

जो कौंध्यां न मेरे मोजदी नाशी माई॥ श्री सघना

यजा सहाय॥ प्रवधैकल छवि द्रगन वसी है॥ राम

चंद्र मुष चंद्र मनोहर फी को लाग त सद

सरसी है॥ मुता हार विराजत उर मै॥ पीतांवर

पट फैंटक सा है॥ रतन जटित सिंघासन राज

त क्रीट मुकट सिर कलंगी लसी है॥ राम स

मी वारत पट मुमन छव नी रमैं, प्राली संदह

यो है ॥ श्री राम जी रागा का पी ॥ हो जग मे म
रतार ते री करहा ग्र स्तुति कीजै ॥ तु ही एक
अ नैम यो है अपनी इ का धार ॥ तु ही सा
जै तु ही पालै ॥ तु ही करत संघार ॥ जितद
वौ जित तू ही तु है ॥ तेरा रूप अपार ॥ तू ही
राम नारायण तू ही तू ही कृष्ण मुरार ॥ सा

६

धौं कीर ज्ञां के कान जुग जु गाले वौं [illegible]
अरु तारा॥ तू ही आद अंत मध तू ही है अं
त ते राउ जयार॥ ज्ञान व देव तो ही सौ प्रघ
टे तीन लोक विस्तार॥ जल थल ते व्यापक
है तू ही घट घट के बोलन हार तो बीन और
कोन है ऐसे जानो करो॥ प्रकार तू ही च

॥ विश्राम ॥

तुम सौं मन है प्रभु तुही पतित उधा
र ॥ चरनदास प्रभु देव तुही है जी
व न प्रान प्रधार ॥ श्री रघुनाथ जी ॥ श्री
अवध मै भयो सोर सगरै अवध मै भयो
सोर ॥ राम कौ वनवास दीनो कैकै ह
की ओर ॥ भरत कौ जीव राज पद दीना

७

हिवाकौलोग॥२॥ववचनसुभाव
सीनौइरीनाहकठोर॥देवतिगतन
हिजातजानीराजकौप्रायोप्रोर॥सु
चौ तवधुनपरातकेदोऊवनकौगैरावा
हवयाकुलभयोसबपुरजाकौ॥अंतन
प्रोरमाधोप्रभुहीनराबयौ॥प्रवध

॥ बिहाग ॥

तुमसौं डोर ॥ ? तनकी कौ कैहै सुध
,प्राय ॥ रामलछमन सही तसी तावसे
राकी तजाय ॥ के कै होसौ कहत कोसल्या ,प्रव
कौन भोजन बाय ॥ सुत वधु जो प्रानसे
रे जीनके परी पाबैधाय ॥ सुध,प्राय सु
तकी भई ठाडी मातपोरी,प्राय ॥ माथो क

॥ बिहाग ॥

है कीत गई जोगी पनीधर नी प्राय॥ ॥श्रीरामजी॥ प्रे हारे तेरे कांधक मेरी या॥ हाथ लकुटीया पत रीको टीमे नेहि बुमैप्रहीर ॥ डुगरी या दीवत गागरी या॥ टेक॥ ब्रंदावन मै गउ चरावत दधमा खनरा गौले आवत॥ ब्रजवासी मेरो

गरवठा वत मां सन बाय पेट नामरीया ॥
ब्रह्माजा को पार न पावै सेस मे हुस [illegible]
[illegible] निगम नि तगा वे ताहुज सो मति गो पंभ
ला वै भगत है मं संतन दुष हरीया ॥ सुषरास
प्रभु भेलव ने हो प्रेम प्रा नेमे, प्रान फसे हो
भगति हु तिगिरि वार करि धरीया ॥ प्रेर हरे
ते रंकां धक भरीया ॥॥॥ सी याराम वि नंको

॥प्रभाती॥ न

करि जीवै॥ टेक॥ मेरे मन प्रभु के चरननि मैं रम
ना नाम सुधारस पी वै संसच क्र गदाप
दम विराजै॥ जब देषौ हृदै बीच छवि वै॥
गोर स्याम भुज निरखि प्रेम मैं॥ कह हूं तब
संत चरन रज लेवै॥ १०॥ हरको सुमरसं
कट हरन॥ कोई क ध्वनि वारडारत जग
तपावन भरम॥ भक्ति पूरन देषि निहव

लप्रान बांध्यौ परन ॥ प्रगण सौ प्रह्लल
दस ध्यो दियो नाही जरन ॥ गिरसिथ रतै
डारिदियौ लगो करु ना मरन ॥ दिन जान
उबारिली यौकि यौ ठाढौ धरन ॥ खंभ बां
ध्यौ घर गाका कौ डुबूला गयौ प्रन ॥ प्रव
वता तेरौ राम कहां है गही जाकी सर
न कीठ है प्र[illegible] हला द्गाया थ्यो डारसं

क्याडूंन॥ मोमै तोमै बरगा अंगमै माधव
नारीएरन॥ खंभफाटकै भए प्रघट धरै
नरसिंह बरन॥ दुष्ट मारे जन उबारे
पुष्प बरखे सुरन॥ मोहु गडरे देव कसुम
देव कंहलीया सेय सोहु चरन॥ चरनदा
स उपासना द्रुकध्येयत्मा रन तिरन॥ १९॥

सकल निरंजन पाया प्रभुकौ सकल
निरंतर पाया ॥ माहीं भीड आप्री
लोनी जो तरवर मै काया ॥ जैसें
जन भुवन राजै सुरत दर्पन माहीं ॥ पु
तली खंभ मै पुतली दूतियां तौ
कछु नाहीं ॥ जो लोह मै जो हर प्रघ

१०

ह न

है सतहीतानावानै ॥ ऐसै राम सका
लघटमाहीविषतजउरनहीजानै ॥
मेंहदीमेरंगगंधफूलनमेपूरैब्रह्म
त्रमाया ॥ जलमेपालापालेमेजल
चरनदासदरसाया ॥ सवालनिरंतर
पायाप्रभुकोसकलनिरंतरपाया ॥ १२ ॥

॥ कहौश्रीपतिरमतृकहीये ॥ टेक ॥
जोतुमहमैंजीवांवनवैहौऋन
बोलिहहीये ॥ कैहरिवैरीकीयेहैफ
रेलीयलीयजोगपठावै ॥ वैहिजाव
भभकरडौरीप्रानमसानजगांवै ॥
हमेरेप्रानजोघातहोतहैमेरेजा

P2

नलसंासी याजीवनतै मरनभलो
है लेलैकरवटकासी॥ कैहरि हमको
प्रानमीलावौकैलजैये साथ्या॥॥
जोपी प्रान तजै सूरप्रभुदासति
हारे माया॥ १२॥ सुनसुनप्रावतहंा
माऊधौसुन॥ कहांवै तिनलोककेठा

कुर काहूं कंसकी दासी ॥ इंद्रादिकको
कौन चलावै संकर कंतवबासी ॥ नि
गम नेति वंदीजन जाकै सेससीसके
वासी ॥ कमला जाकै बसनिरंतरकौ
नागिनेकुबजांसी दासी ॥ सूरदास
प्रभुद्रढकर वांधेप्रेमप्रीतकी फंसी

॥१४॥ नीकोनामह रिकौवसंवो,प्रवध
पुरीमैनीकौ॥ टेक॥ उत्राखंडप्रजो
धयानगरीनिरमलजलसरजुकौ॥रा
मघाट,प्रसनानकरनकुंदरसनराघोजु
कौ॥ गंडजमाःलकरधनुसवीराजेसिर
केसेरकोटीकौ॥रामंछमणभरथस
त्रघनछोटादसरथजीकौ॥ सवकु

पं नको मानमयोहे धनुषजोरसिव
जीको ॥ प्र वधपुरीनरनार बसतहे
हनुमानअंजनाको ॥ तुलसीदास
स्वामी ध्यानधरतेहु रामलछमणसी
याजीको ॥ १२ ॥ रागप्रभाति ॥ संकेतकं
जद्वारलगी ताविनलीयेगावै ॥ टेक ॥ छु

१८

टीप्रलष कूली पलक जो न छोरैं प्रावै

॥ श्री राधा कृष्ण किसोरी रवन सु मसा

र का पढावै ॥ टेक ॥ स्प्र ष्ट राधा प्रसुजा

म लाल को लडा वै ॥ पोढे सु जसे

ज लाल लला ङ्ली ज गावै ॥ टेक ॥ मं

के हर न सु ष म करे न सो मे वे म न

भावै॥ जसमत हरि वंस स्वामी वेगि
दरस पावै॥ अंकेज [illegible] यमलताव
नलियेगावै॥१६॥ तिन लोक सौं न्यारा
प्यारी मथुरा वेद न गाई॥ पदम नाभ
जु की नाभ कवल मै वाराह जु परचा
इ॥ धन वसु देव देवकी [illegible] जसुधा

P4

धनंनंदकी पुन्याई ॥ कंसामोरे संतउ
बारे धन प्रोंत्तारकन्हाई ॥ भड्जे सबरु
मोनवाल जहांके सो अरायरजाई
॥॥ पटरानी उत्तम कुल बोवन प्रपन
देंहुवनाई ॥ चौवा सघाट का महहमा
वरनो किंचवा मरां त्तवनाई ॥ फरम

तंरंग गावैंहृ कालंद्री वसंतके मन भाई। तिनलोक ते न्यारी प्यारी मथुरा वेदन गाई॥ १७॥ श्री वृंदावन वृंदावनवृंदावन कहुरे॥ वृंदावन रज की तु सरन वेगि गहुरे॥ टेक॥ भटकै जिन देसदेस भेष कौ लजावै॥ कुंजन की को

तवैंछ्जुगलकोनगावै॥ भलौवनौ
दावतेरो,प्रायकौगवावै कुदजाय
छिनमैततनपाछैपछितावै॥ चतुर
तोहिजानैअजनवचैहैसवेरो॥,प्रव
हीकरिलेउक्योनाप्रापनोभवेरो॥
॥राधेमनमरासोतोहिपावैश्रीराधा

किसोरीचरनछ्रक सरनभैटै कोटिबा
धा॥१८॥ मुषदेषनकौ आइलालकौ
मुषदेषनकौ,आइ॥टेक॥मलमुष
देषिगइदधवेचनजातेहीगयौहे
विकाइ॥,आरदीनातेडुनोलाभभ
योघरिगायनवकियाजाइ॥,आ॥३

८०

धायधाउसवसखियनलालदेवोज
गाहै मदमुसकांत उठे मनमोहन
ग्वालनरहेसबुलाई ॥ परमानंद
सयानीग्वालन सैनसंकेतपठाई
॥ मुषदेषनकोप्राइ लालकोमुष
देषनकोप्राइ ॥ १४ ॥ श्रीरामचंद्रजी

कौप्रभातनिच्योत ॥ श्रीरामचरनप्राभि
रामकौमपदतौरथराजविराजैं ॥ टेक
॥ संकरहृदेभक्तिभूतलपदपैंप्रेमेवटकु
जैं ॥ टेक ॥ स्यामवरनतलप्रयप्रसन
६ कविलसविसदनषप्रे णि ॥ मनुरथीसुजा
मारदारु र मरीमलचलालितचवण
॥ टेक ॥ श्री प्रंकुशकुलिसकमलधुज

चिंतीत भव रत तरंग विलासा । टेक । । मनु
जु ही सुरसजु नमल सु रसरी मुदित
मनोहर प्रासा । टेक । । बिनु बैराग जो
ग विनु सजम विनु तीरथ पत नु त्यागे
मोडु सु भजु लभदास तुलसी । प्रभु
पद प्रयाग । प्रकरागो । टेक । । श्रीराम

चरनकूप्रगरामकांमपदनारथ्थराजवी
राजै॥१२०॥ मुकसिबावनमेरोसुबीम
नमूरकसोयावनमेरो॥टेक॥ हरिपद
विमुषमकाहूनलहैं॥ सुजसठइहराम
जैसेवैरी॥ जदिपप्रीतिपुनीतसुरसरी
तासिहूपुरसुजसघनेरो॥ नजचरनन्न

१७

जहैंनमिटैदुखबहुवैताहुकेरौ॥बि
केरविसासिमननैननतेपावतहुख
वहुतेरौ॥भमतसभतनिसदिवसग
गनमैंताहांरिपुराहुगाहेरौ॥भटहि
नविपतभंजाविनरघपती॥प्रीतिसंदेह
नवेरौ॥तुलसीदासमवप्रासकाउकै

रहो हुयमैं चैरो ॥ सुनि मन मूरुका
सु ० बावन मैरो ॥ इति श्री प्रभाती ॥
पु ० ए ॥ श्री सिंघ नाथ जी सहाय ॥
सु ० गुर राम स्वामी प्रवधवंद जा
न की सुयवंद प्रवधचंद ॥ जलपर
भुवविसारं ॥ रावनवधनु सरराज्ञ

समार न ॥ कुंभकारन सिंहांर होप्रभु
सीवत प्रसि पालं ॥ मुक्त माल कोस्तु
भमनिधी रामश्री पति रघुनंदं धनुर्धा
री हे प्राण सुषकारी ॥ वि श्वइ सभ्रा
रघुवर गय्या नीधानी प्रिय वान
प्रंतरजामी रसविंदं ॥ टेक ॥ जसत

थकौसलमनरंजनकाटत्तसबके
दुषपंदंतासुध्यानधरैनेनप्रव
स्यकाछूटतजमफंदं॥धनुबांणहैप्रा
नसुषकारी॥विश्वईसश्रीरघव
॥रगुपानीबानीप्रीयवानीप्रंतर॥
जामीरसाविंदं॥प्रवघचंदसुमर

३

राम स्वामी प्रभु धर्चंदं ॥१॥ जैनारायणा व्रह्म

पराय ण॥ श्री पत कमला कंत॥ ब्रह्मा प्रादि दे

व सनकादिक नारद ध्यान धरंत॥ नाम प्रंत

ने म हा लगी वा नो ते स पा वत प्रंत॥ जैना

॥ दा ध्रु मक्क सूक ध्रुर ध्री प्रभु वा व

पधरंतं॥ ~~परसम बहु~~ परसरामसो

इश्याम चंद्र हु रा॥ तीना कोटि वारंत

यो

ह

वसुदेवकग्रंजनमहीहि [illegible]

जसुधागोविंदनंतं॥ वंठपताल कालीनागना

थापनफनिरनकरंतं॥ जैना॥ बलगदुहु

दैतसंघारिकंसकेकेसगहंतं॥ जगना

षजगकीरक्षाकारीवैठिरैयनिहचंतं॥ जैना

॥कउकुलगम्रहरनेननिहि कालकोछुहदसवि

२

धिसपधरंतं ॥ दसमसकंध भागवतगावै
सूरसरनभगवंतं ॥ जैनारायण ब्रह्मपरा
२ य श्रीपतिकमलाकंतं ॥ २ ॥ श्री रघुनाथजी ॥
श्रीसीतारामजी ॥ श्रीरामजी राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम
२०४ श्री रघुनाथजी ॥ राम

Series II

॥ श्री सीतारामजी ॥ ग्रंथ प्रभातीलिषते ॥ तो
हि न, प्रसीव्रुजियै हनुमान हठिले ॥ टेक ॥
साहिव सीता नायसे तौ रुठि रिले ॥ टेक ॥ दे
षत तोरे सिंहु कौ सिस मडकालिले ॥ टेक ॥ हु
कौ देत दस कंधर के वंधन भये कीले ॥ टेक ॥ सो
वत ताकै धौ गये का हुं ॥ रु नगर वगहिले ॥ से

२
३

॥टेक॥ जानत हौं कलि तेरे हूं कछु गुन गान
किले ॥टेक॥ अधिक प्रापते, प्रापनो ॥ सन मा
न सह्यो ह्लिले ॥टेक॥ सा स न तुल सी दास की
सुनले हू छुठिले ॥ तिहो काल जिन को
भलो जे राम संठिले ॥ तो हि न, प्र सि बु जिय
हनुमान हू ठिले ॥ इ श्री प्रभाति सं पुर्णं ॥ ३
ती

॥ श्रीमतेरामाँनुजायनमः॥ दोहा ॥:

तुलसियासंसारमैपांचरतनहैंसार॥

साधमिलन, औरहरभजन, दया, धरम, उपगा

र:॥ दोहा जाभिजाभिभाजत शक्रसुत व्याकु

ल, प्रतदुखदीन॥ तोमातामि ४ धावतरा

२
४

गसरूपा है परम प्रवीन॥ २॥ दो॥ निज निज
प्राश्रम वेदका तिहिपर लुलसि राज॥
प्रनुज जपा नकि साहितता हां राजन भ
येरघु राज॥ ३॥ दो॥ सुरपती संसय तव
भैरघु पति तेज दिने न॥ रामन जीव

न नौ सिसमै वित छुछुटहि कोलेस ॥ ४ ॥
॥ दोहा ॥ सिनाप्रातसमेत प्रभु नहत जलद तनस्या
म ॥ मही हवसहु निरंतर स्व गहन रूपश्या
राम ॥ ५ ॥ दो ॥ तेरि द्रुम प्रेरद्रुम सैं जगआ
रतहै पार ॥ भैहि वु डोजातहु हाहा नैक
निहार ॥ ६ ॥ दो ॥ जो ताकि सरनै रहै वाकिवा

२५

मौलाज्ञ ॥ जलमैँ मछी चौंठ वेहे जंगत
गजराज ॥ ७ ॥दो॥ प्रगम निगम जान्यो न
हि सुगम जारनि देहु ॥ तुलसि ये व्रतक
ठन हे वचं पाल वो नेह ॥ ८ ॥दो॥ दधसुत
प्रलनिप्रधर पैसो भाग्यहित छलंत ॥ प्रां
नेमुजा सिकं यरि पंछी मनेकरत ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥ सितापत की कोठरी चंदन लेरवी
वारः ॥ ताली लागी प्रेम की खोलो कृष्ण
मुरार ॥ २० ॥ दोहा ॥ सितापत रघुनाथ जी तु
मलग मेरी दोर ॥ जैसें कागजिहाज मैं प्रे
मन सुजे ठार ॥ २१ ॥ दो ॥ जल सुत केनि चैव
सैं मोती सुत के विच ॥ ताहंमा शनिराधका ॥

२५

कारै स्याम व कसीस ॥ १२ ॥ दो ॥ प्रान पुखेदा उप्रधिक है च्यारैं जुग परमान ॥ दूसर यनै दौनो तेज व चन तदिने जान ॥ १३ ॥ दोहा ॥ वृंदावन वान काव नयौ भमर कारतंजु जारह ॥ दुलहन राति राधका दुहूं नंद कुमार ॥ १४ ॥ दो ॥ व्रजचौरासी कोस मे च्यारगा

म निज धाम ॥ व्रिंदावन औ रमधुपुरी वर
सानो नंदगाम ॥ १५ ॥ दो॥ सम जायो सप्रेम
नहिर ह्यौ निचकौ निच ॥ जौं जौं कोठी धोइय
त्यौं त्यौं निकसै कीच ॥ १६ ॥ दो॥ औरहु सा यो अ
गार में रहियो, प्राप विचार ॥ भागोत जी
नै प्री तकरै तिन को देय विडार ॥ १७ ॥

॥दोहा॥ राधाजु के वदन पै वैंदा, प्रतिछव
देत॥ मांनो फुली के तुकी भमर वास ना
लेत॥ १८ ॥दो॥ हरदी जरदी ना तजै षटरस
तजै न [illegible], प्राण॥ सिलवंत, प्रौ गुन तजै गु
न कुं तजै गुलाम॥ १९ ॥दो॥ कहा कहुँ
कवि, प्राज की भले विराजे नाय॥ तुलसी

भक्त को जब नव, औरधनुस बान लैयाह
य ॥२०॥ दोहा॥ वन वनऊप्रगारन उपजै सर
सर कांवल न होय ॥ रूप कावन कहा हां रंजीये
गुन रंजे सबकोय ॥२१॥ दोहा॥ वेड वधाई ता
तजै वेड नबोलै बोल ॥ हीरा कहा मुक्तेवा य
है लाख हमारो मोल ॥२२॥ दो॥ तुलसीध

रजके धोरेम नभर कुंजर खाय॥ ६ कहु कोके
कारनै स्वान घराघर जाय॥ २३॥ दो॥ कहा
नहो तसत संगते देखो लिल प्रौरे तल॥ तो
ल मोल सब फीर गयो परि गयो नावफु
नेल॥ २४॥ः॥ नाम मैहा तम साखि सुनै जीव
ते कबात॥ साव भै गीरवरति रै ज्यो तरै

वरके पात ॥ २५ ॥ दो ॥ राधा जीके वदनैप
वैंदा, प्रति छवि देत ॥ मानो फूली केतकी
गभ्भर वा सना लेत ॥ २६ ॥ दो ॥ वनमा
लीतन केवरा सिंचनइ मत वैंन ॥ प्रजपु
सके वागमें, प्रजव फूलदो नैन ॥ २७ ॥ दो
हा ॥ कागज पो राहित घनो कौं हाँत कला

२
८

खुवनाय ॥ सागर मै पानै जल बोहो
त है गागर मै न समाय ॥ २८ ॥ कित
मुरलो कित चंद्रका कित ● गोपा मन
को ● माय ॥ प्रपने जन कै कारनै ना
थ भये रघुनाथ ॥ २९ ॥ सीतापति के
कारनै नैन बायो सीस ॥ कहा भवीढ

गुदैपितलौ गाढलंकमकरीवकमसीम ॥ ३० ॥
सकलविभौसंसार की सबहुइ सथिर
नाहि ॥ तिहि कारन ग्यानी पुरस मन नध
रत धन माँहि ॥ ३१ ॥ स्वारथमयगजनरूपकौ
गाहक कहि सब कोय ॥ तुलसी प्रातसरा
हिय इन सौं न्यारी होय ॥ ३२ ॥ नकुंकिया
न करि चले रैन गै वाके सोय बालीहाथ

नजानहै, प्रवदेषियैयचागतहोय ॥
३३ ॥ नपत नारि नाहरज तीनीचजानह
षियार ॥ तुलसी इनके पलटै तै नाहिनला
गतवार ॥ ३४ ॥ सीताराम की कृपावि
न कुबन ही कौ रैज होय ॥ सब जग पेके
पाकैरें जैसु तैं की तात ॥ ३५ ॥ जमुना
तट ब्रजभूम मै जादैवमुरलीहोय ॥

धैतचरावतजौपजुकीजैंश्रीहरिनाथ

॥ ३६ ॥ कवित्त ॥ प्रंगसुचारुसुगंधलगा

यैं ॥ वासचहुंदिसकौमहकौ ॥ करसिंगा

रचुंकीजोप्रटाकुंलालनकौतवहियराप

हकौ ॥ करएकसुंकंकनजायहिरो

सिकियनसिकियनफिरत्तौवहकौ ॥

कविगंगकहैएकसुद्धआयौठहनठह

नं ठहनं टहकौ ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुएज्ञा नप
तिहि लिखै ॥ सब सम म जानि मोहि ॥ माहि
राज रघुवंस मनि ॥ जाचन आइ तोहि
करत राम प्रति हेत सौ ॥ आदर अधिक अ
प्रपार ॥ करुना वचन सुनत प्रभु मग
न भये उतर गार ॥ छंद ॥ परसत पद पा
वन सोक नसावन ॥ प्रघट भई तप पुंज

सही॥ देखत रघुनायकजनसुखदाय
क॥ सनमुख करि दोउ जोर रहही॥ प्रति प्रेम
प्रधीरा पुलकसरीरा॥ मुख न ही प्रावत
वचन कही॥ प्रतसैं वडभागा चरनन
लागा॥ जुगल नयन जलधार वही॥१०
धीरज मन कीन्हा प्र[illegible] भू कौ चीन्हा र
घुपति कॆंपा भक्त पाई॥ प्रति निरमल

वानी, प्रस्तुत ठानी ग्पान गम्प जैर घु रा है ॥
मैं नार, प्र पा वन प्रभु जग पावन रा वनि रि
पु जन सु मदाइ ॥ राजीव सुलोचन भव भ
य मोचन पाहि पाहि सरननन प्रहि ॥ भुज
मोहि उपदेसा भन, प्रवधेसा य हीलाभ
संकर जाना ॥ देमे उभवि लोचन हरि भ
व मोचन य हीला भस कर जाना ॥ विनती प्र
भु मोरी मैं मत मोरी नाथन वर मागौं, प्र

ना॥१ पद पदम परागा रस प्रनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥ यहि भांति सुनैना प्रभु तिवय तावारवार हरि चरन परी॥ जे प्रति मन भावा सोई वर पावा चरन नायगु जसीसधरी॥ दोहा॥ एैसे प्रभु दान वधु हरि कारन रहित कृपाल॥ तुलसीदास सठ ता हि भज छाड कपट जंजाल॥ इति श्री रघुनाथ

श्री,प्र,सू,तसंपूर्णं ॥ श्री सीताराम जी॥ एकस
मैं सिव के मिलने हरि के मिलने कुं श्रीठा
कुर कैलास पधारे॥ टेक॥ वैठे हे सिवध्या
मन मारें हां हे,दो सप विचारे॥ उनकी का
तकी पान कंदनी,प्राये राम सिव उठ कै जु
हारे॥ एक समैं॥१॥ गरुड देख मा कुं लगे
ये दोनों,प्रागे निरखि सिव पावनि हारे॥ प

रवि सभा जि वसे वँव ई मे गौर रहँ सी सु थंभ
चल डोले ॥ एक समैं ॥ २ ॥ जपट मठ देव लिया
वा घं प्यार सी मजटा गह सूल जो र गधे ईस
त वूंद पडी स मुतपर सिंघग एजुरवल फ
द मोरे ॥ एक समै ॥ ३ ॥ इत नी सुति नाद सुँगा २
ग भुजंग पसा चलि यैं लल कोवे ॥ उठ गर जा
सु त नाच नला गी धत स्वि यौ वडे भाग हमा
रे ॥ एक समैं ॥ ४ ॥ यह कौतू हल देख प्रीत

कुरप्राय भए नमैं वजाय नकारे ॥ माधोदा
स प्रा भुचर ननकी हरिके चरन पर रहे सब
ल हो रे ॥ एक समै हरिके बाल तैसवे मे
लने कूं श्री ठाकुर के लास पधारे ॥ ५ ॥
वंसीवट सातल कद मकी छइयां चलो सषी
स्याम प्रते गाल बेइयां ॥ टेक ॥ प्रपनी गर
जे कूं प्रात समै होत नित उठ प्रावे कुहावता

जै या॥ मै जो प्र के ली मेरे संग ना सहेली

मै जो प्र केली स खी मे जे हि मुइ यां॥ ३॥ व

इ यां प कर ले गा यो रीकुंज न मै मे जो सया

मेरे संग कोई नहियां॥ इ तवि न वि छ व

त घुं घट खोले प्रौर कह त चल हुं जा कौ क

नहि यां॥ ॥र॥ ब लि या बे ल गे ले मे री रो के

हँ स हँ स क मेरा घु घट खोय ले॥ बल व

लकारकाति यांहु यला नी,श्रीरकहे चलोरसभु
सलीना ॥ ३ ॥ मेसोदासस्वामीरंगरसकेवि
हारीहरचनौकुंमामनेवेयां ॥ दतपतद्व
स,श्रीसचरननेकाजानलातुमेरारावा
गउमैंयां ॥ वंसीवटसीतलजदसकीव
इयांचलोसखीश्यामजातेगलवइयां ॥
॥ ४ ॥ ॥ श्रीरामजी सहाय ॥ श्रीनाथजी

॥श्रीसीतारामजी॥ लालानंजीनंजीनावो
नैनैराजह्मारेमेलोहियेदुंगात॥ टेक॥ मं
नोतोमंनेतोनुमकावरमूछांई॥ हुसमेन
भाइगालनागासारीरात॥१॥ सुतिकेस
समदांसुखपावै॥ रंगरीकरेसंपावात॥
२॥ विकुदासप्रभूसरनतिहारी॥ हुमग
लीनुमपातपातपात॥३॥ लालानंजीनंजु

॥श्रीसीतारामजी॥ सुंदर वदन देषि रघुवर कों कहत सषिन सौं जनक दुलारी॥टेक॥ ठाढी सीता सोच करत है हमै पीताजी को पन प्रन भारि॥ कठिन धनुष सौं सिंकर जी को कोमल गात उमदि याकि ध्यारी॥१॥ चांप चढै न चढै मेरि प्याली मै प्रपन जिया यहि बीचारि॥ बीसवीस वार हौं रघुवर कुं नातो जनम भर

जी
सो कुंवारि ॥ २ ॥ भैत्र प नोपत जानि सखी री आरचवि
गल जय मालारि सीं घ्या भुप सबै जूरि प्राये ॥ जा ओ
भवन तजि प्रा सहु मारि ॥ ३ ॥ तो स्योधनु सजन कप्र
नसायी हर्षित भये हैं सब नर नारी ॥ तुत सादा स प्रा
सरघुवर सीकवचित वोष्र भुप्रोर हु मारि ॥ ४ ॥
सुंदरवदन देषि रघुवर कौं कहत सषिन सौं जनक
दुलारी ॥ ५ ॥ तैसो मन भरि लोचन लाहु ॥ टेक ॥ सषिक
यातिये काम षला पुर घर घरा लिखदेत सबका हु

हुकौं हौं घरि घरि इहस्त्रव मरनारि पु॥ असव कोनिर
वाहु॥ टेक॥ कवकव रामजनक पुर, प्र यहे कवनु॥ म
नगत्र, प्रजुध्या जहौ॥ हौ इहि दरस हू नमंदपति को
समकिस म्मुफ फिरि मन पछितै हौ॥ टेक॥ सेसाम
रा हेस सवै मबराजि तरा मध्य को विदित विवाहु॥
र हुआत मगन गगन सुर वरषत [illegible] सकल मु
व मंगल तकाहु॥ टेक॥ रूप प्रनू पमरूप गुनमा
गुन सागर प्र अहिवि लोक छाकि तमंहि मैं हु॥ तुलसी

दासब दमा गप सब न केचि तरत जै॥ हज्या नकी नाहू
॥ ले लेमा रीभरि लो चन ला हू ॥४॥ अथ वात मेप गालि ख
ते॥ वात मोगकी जैराम जी ल ला॥ टेक॥ तुम मेरे प्रान
जिव न धन वा रै नैन न सैं जे रोपा ला॥१॥ बे हामे बाप न
कवा न मि ठांई॥ वाजा सुर मा समरपा श॥२॥ कंचन
पाइ समार सुमिंत्रा॥ प्रान न्पाइस जुंगज ला॥३॥
दघु वर ल दम न लुमेरे लाइ ले॥ नर पस नु घन, प्रनँ
दम ला॥४॥ धन, प्रनु प सन न सु ख दाइं॥ लिलानट

ਵਰ,ਪ੍ਰੰਨਦਕਲਾ ॥ਪ॥ ਵਾਲਮੋਗਨੀ ਜੈਰਾਮਜੀ ਨਲਾ ॥ਰ
ਹੋਉ॥ ਰਤਨ ਜਰਾਵ੍ਰ ਕੀ ... ਕੀਵੈਠ ਦੋਤਭਾਈ ॥ ਕਨਕਕ
ਹੋਰਾ,ਪ੍ਰਾਤ ਹੀ ਦਧਘੀ ਰਤਨਮਿਠਾਈ ॥ਟੇਕ॥ ਖੇਲਨ ਤਸੰਵਾ
ਤਦੁ ਗਾਵਤੇ ॥ ਜਗਰੈ ਦੋਤਭਾਈ ॥ਕਨ॥,ਪ੍ਰ ਰਸ ਪਾਸ
ਚੁਟਿਯਾਗਹੈਂ ॥ ਵਰਜਨ ਮਹਤਾਰੀ ॥ਕਨ॥ ਮਾਹਾਠੀ
ਠਮਾਨੈਨਹੀ ॥ ਜਾਕੀਲੀਹੋਰਵਡਾਈ ॥ਕਨ॥ ਈਓਂ,ਪ੍ਰਾਂਦ ਤ
ਰਹਨਾ ॥ ਦਸੋਧਾਮਸੁਕਾ ਨੀ ॥ਕਨ॥ ਜਹਜਲੇਂਕੀਸ
ਵਗੋਪਿਕਾ ॥ ਦਰਸਨਕੰ,ਪ੍ਰਾਈ ॥ਕ॥ ਨੰਦਬਾਬਾ ਨੀਕੀ

पौरमै ॥ दधक्षीचमचाई ॥ कत ॥ रामक्रमालाना
रची ॥ संतनसुखदाई ॥ का ॥ जगन्नाथधरनीधर
माधोवनजाई ॥ कतककाडोराप्रातह्वीदधया
तमाकाहै ॥ ट ॥ कतेउ ॥ फगनमगनप्याहलालकी
जायकलेवा ॥ टक ॥ गवालवालदोरेठोडेजाययोयेदे
वा ॥ पालीपचरंगपागप्रीतफेंटमेवा ॥ ह ॥ जसम
गतसुंदहीमोंत, प्रोरमागनमेवा ॥ पायनचकचोर
पाया प्रोरझपटलेवा ॥ ह ॥ जोवनसंगदीगरजा

त ख्वा लत त संगत करवा त ॥ मोन बान परी ला लति
त्य नहि देखा ॥ ५ ॥ सूरदास मदन मोहन पूर हीको
न देव लोला लल ॥ भोंरा चक डोर मो हं स जो पे खा
राग न मगन प्यार ला ल का तीय कलेवा ॥ ४ ॥ रा
ग उपा पूर्ण ॥ प्यारा मजी ला ला मोहि भावें हो
॥ टेक ॥ चा में मैया रा म जी सुंदर स्याम ॥ मैया
जो दधि लावें हो ॥ टेक ॥ पित जगमति या सुंदर
सो हू मैया होय ॥ हाथनि रचि पकरावें हो

१

टेक॥ सिं सोहै ज़र कसस की पाग॥ कांनतकुं ध्रा
जल कांवैं हो॥ टेक॥ लाल अंगरी सुंदर सोहे रघु
बीर पावु॥ प्रब धि तनग रफ्कार ध्रांवैं हो॥ टेक॥ को
टी सी घै ते या रामजी को टेको दुती र॥ खेलतम
रुग बों सरजू के तीर॥ टेक॥ चारों भैया रामजी चतुर
सुजा न॥ लछमन चमर कुराम है॥ टेक॥ प्रा
गदा सजी के सीया रघुबीर॥ नैनन मांहि
समांवैं हो॥ श्रीरामजी लता मो हमांवैं हो

॥श्रीरामजी सहाय॥ राग प्रभाती॥ राम लछ
मन कौसल्या मैया, प्रंगना मै गोदधि लंवैसी
॥टेक॥ ग्रहते पौरि पौरि ते [illegible] ग्रह लगि मै
या चलन तसि खावैंगी॥ कर मैं इक लियें पुरी
कौ काग भुसंड वुलावैगी॥ टेक॥ पितन जगु
लिया तन नि विराजै॥ भौति मालजलु कावैसी
॥हुमकि हुमकि पग धरत धरनि पर बौहोरि
गोद मै, भ्रावैगी॥ टेक॥ सिव सनकादि, भ्रादिक

ब्रह्मादिक सेस पार नहि पावै री ॥ ताहि कौस

मन्या मैया गोद खिलावै नृत सादाँ ज स गावै म

री ॥ राम तनु कु मन कौ सन्या मैया प्रेँग ना मै

जो खिलावै री ॥ ३ ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात सम

रघुवीर वदन छबि चितै चतुर चित मेरी ॥

होहि विवेक विलोचन निरमल सफल सु

ितल तेरी ॥ टेक ॥ भाल विसाल ललित भृकु

५१

टिवि चति लेरे सरू चिराजै ॥ सो मोहू मदन तम
तकि सरक फजु गलै कुन कसर सोजै ॥ टेक ॥ वी
र घलु कलो चन जुग न जुग तारि रिकसपा मध्र
कुन सित ॥ कोयें सनु, प्रति न कोय हवंधु कसु
सुन सेज सज सोये ॥ टेक ॥ विलु तित ललित तक
लो पौन पर कच सेचकं काटि लसु हाये ॥ सनु वि
थु महवन सहवि लोकि, प्रलि विफ लसु कोलु

हो

का,ग्राये ॥ टेक ॥ शोभित श्रवन कनक कुंडल कल

लित लंवित वि भ्रु भ्रुज म्रुले ॥ म नों कें ऊँ कित कि गहन

चेहत जुग तु र गायं दु प्राति कुले ॥ टेक ॥ चारु च

वुक ग्रु ग्रं नु न वि निं दित मधुर महर नासा ॥ तु

लसी दास छवि धाम राम मुख समम सम न सकल

भव त्रासा ॥ प्रात समे रघु वीर वदन छवि चितै च

लु रचित मे है ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात समें रघु वीर

जगावें कौ सल्या महतारी ॥ उठौ लाल जी भोर भ

मोहै जागो प्रवधाविहारी ॥टेक॥ वंदीजन दारै
जस गावैं नाचत देदे तारी ॥ वेदविमलवानी ज
स गावैं रघुकुल जसविसतारी ॥टेक॥ वसा
मी वइंद्रादिदेवता सनकादिक मुनी चारी ॥ सं
न सहित सभी वहारे ठाढे होत कलाहल भारी
॥टेक॥ सुनत प्रीयवचन उठे रघुनंदन नैनन प
लक उघारी ॥ चितवत प्रभुकी यो प्रचराचर मु
दितभये नरनारी ॥टेक॥ कै प्रसनान सनान पद

दीयो राजा रघुनंदन जग मैं वारी ॥ जै जै कर रत घन ८
माधो तन मन धन सब वारी ॥ प्रात समै रघुबा
र जगावै कौसल्या महतारी ॥ उठौ लाल जी भोर
भयो है ॥ जागो प्रबंध बिहारी ॥ इती श्री प्रभाती
पां पूर्णं ॥ श्री सीताराम जी ॥ ब्याहन प्राए राम ज
नकपुर जसरथ जी के लाला माधो जसरथ जी
के लाला रे ॥ टेक ॥ राजा जनक के द्वारी कन्या च
हुँ दिस पत्र पठाए दे स देस के राजा प्राए कनक

४३ नधनसचढाएरे॥ व्याहन॥१॥ विस्वामित्रजवत्र
ग्यादीनीरामचौँपढिगा,प्राएरे कमलनालजीस
चांपचढाएदेवसुमनजरलाएरे॥ व्याहन॥२॥
तुसरथजीचलेसाजवराता गजरथतुरंगसमा
रेरे॥ मोतीयनजालरनारचहुँदिसमानकमंड
फढाएरे॥ व्याहन॥३॥ रामचंद्रजवमंडफप्राएरु
वरनकलसमागाएरे॥ वैठेब्रह्मावेदपढनेहैनार
दविनवजाएरे॥ व्याहन४॥ कवकवरामजनम

पुर,प्र यहैं समायन मंगल जाएरे ॥ तुलसी-

दास,प्रा स रघुवरकी नरनारी न सुख पाएरे ॥

का हनप्रा एरामजनक पुरईं सरघुनाके लानारे

॥५॥ केसी ल्याए पाती जघो मैं सो ल्याए पाती रे ॥ दे-

के ॥ पा पाती मैं जोग ला घो है हम सैं सुनी नजाइ

तीरे ॥ यह पाती कु वजाकुं दी जौ सोतन हो जाइ

य कह तारे ॥ ६ ॥ हम कुं जोग भोग कुबजाकुं एव

ली यान सुहातारे ॥ सोलै सह प्र गोपका छाइ

५४ दी कुबजा के भए साई ॥२॥ जब सुं कान्हा गाऽ
धारि का नैन नींद न हो, प्रातारे ॥ हरि बिन मोऽ
हि कौ कल न आ परत है सोच त हुँ दिन रातारे ॥३॥
कुबजा चेरी कंस री, जा की, औरै बांदी कह लाता
रे ॥ सूर स्याँम जादौं पत औऽ वा के हुए सैं गाऽ
तारे ॥४॥ कैसी लाए पाती रे ॥४॥ गुपजन मे
ब की कही ये रे ऊधो वाहरि सुं प्रभ जाय के रे ॥ टेक ॥
जैती चोर बीन वधुवा ते सब सबी यन मैं, प्राय के

रे ॥ ध्यान धरि जिन पावन लागे सो सो बिर याँ राय
कैरे ॥१॥ प्रबैतावै हरि राजा भए हैं घ रावन लाभै जा
यकैरे ॥ सालगराम चरनां मन लागै कै है गह रे घ
ट बजायकैरे ॥२॥ जपत पकर नचलीबा लैयापि ऽ
कले,प्रीगुनहि पायकैरे ॥ उधोजी माधौ मु कहि
यौति की कानल गायकैं रे ॥३॥ उधोजी चर नन
की महिमां कहि यौ ने हा लगायकैरे ॥ प्रबैताद
सन॰ देहो मुरारी बंधावन मै,प्रायकैरे ॥ जुपत

९५ मतेमोकलोयेरे ३ घोवाहरिसंमग्रजायकेरे॥
१५॥ मामेरमूहैयप्यारेनकछबग्रपनीदास
लायेरे॥टेक॥मोरमकटपातांवरसोहे॥का
ननकुंडलन्यारे॥१॥भ्रकुटीमालतालकके सरकोर
॥ सोहतकुंचनकमारे॥२॥मालतालकतुंमाका ल
मालतासोहत॥चंद्रलिनारे॥३॥चंद्रसबाभजबा
लक्रामछवि॥वंसोप्रधकबजोरे॥४॥सामेरक
हैयाप्यारे॥१६॥०॥नीकेविराजेरघुनाथ

ज्यानकी॥टेक॥ कांये,प्रंगसियाजाविराः
जै॥ दायेप्रंगवीराजैरनाथजी॥नाके॥
कैंगुरनकैंगुरनकलसविराजै॥ प्रागैतो
मुरतहुगी हुनुं मानकी॥नाके॥ सामरेः
सेरामगेरासीज्यानकी॥ क्याकविवरनुः
यह,प्रभिरामकी॥नीके॥ तुलसीदास,प्रासा
रघुवरकी॥ क्याकबवरनुं यारघुनाथकी

५६ नीके विराजै रघनाथ जू जानकी ॥ १७ ॥ सीता
कारन लंका मारा फिर गई राम दुहाई
॥ टेक ॥ कहत भभीषन सुनपीया रावन
न तैं क्या कुमत कमाई रे ॥ मार मार रघु
कोर कर डारे ग्रीयाहर पराई रे ॥ सीता ॥
मेघनाथ से पुत्र हम मारे कुंभकरन से
ना भाई रे ॥ कंचन कोट बनी गढ लंका सम
दर सी खाई रे ॥ सीता ॥ हनुमान

सेपायकजिनकरामलछमनवलभाई ऽ
रै ॥ जरती, प्रगानमैकुदपैंवैकोयहीं ऽ
मैंनाआईरे ॥ साता ॥ जोकोइभजतरा ऽ
मलछमनकुध्यानमीसदासहाइरे ॥ तु
लसीदास, प्रासारघुवरकीचरनकम
लबलजाईरे ॥ साताकारननंकामारी
फिरगईरामदुहाईरे ॥ १८ ॥ प्रारासखी
मुनिसेंगवानककोकेमतवारैनैनाज

४७ के ॥ टेक ॥ रविससिकोटि वदन की सो
म भा गौरतन ताके ॥ लछमन राम कौ
स त्या के जाये दसरथ नाम पिता के
॥ मत ॥ पात बसन बैजंती माला क्रीट
मुकट सिर जाके ॥ गौतम रिषि की ना
र प्रहि ल्या तारा चरन छुवा कै ॥ मत ॥
रिषि की जग्य संपूर्ण करिकै गढ़ प्रा
ये राजा के ॥ भवन पतन की म मता है

रीरामनैकाजकीनसायाके॥मत॥सबस
यियनमितसायकेसयंवरपूजाकरतउ
माके॥तलसादासेसवकरघनंदनलेस
तिसेविधनांके॥४८॥रामपियारेसुधिप्रा
निलेरै॥टेक॥व्याकुलहोतचित्तनमितसवि
रहप्रगानिलागाजाननैरे॥राम॥राजकु
वारचतुरनटनागरजोजियहोयसा

४८ छानि लै रे ॥ राम ॥ राम सनेही दैदर सद्भग
न कौ इतनी अरज मेरी मोनि लै रे ॥ रा
म पियारे सुध आन लै रे ॥ २० ॥ नाकी
नो हरि कौ सुमरन सब दिन मोही ऽ
गये रे ना कीनो प्रभू कौ सुमरन ॥
टेक ॥ न्हातैं धोतैं खातैं पीतैं लरतैं झऽ
गरतैं होगई सांझ आई नाद जबसा

यरहेरे ॥ नाकी ॥ देखत फिरत रैंन दिन
वा ते काम क्रोध मद तजे न जीते लोभ मो
ह मै फासि रहे रे ॥ नाकी ॥ परनिंद्रा पर
नार नाला राजम पुर मारि परैं गा भारा
का लादि चा ने होय रहे रे ॥ नाकी ॥ तुल
सी भजर घु बीर पाया रे सकत तज
गते का त्यार न होर हरि स्मरतमव

१८ पार हुये र॥ ना कीने हरि कै सू मर
न सब दिन नेता गि गये र॥ २१॥ प्राजउ
न के भाग जिन के साधु प्रावे पाहुना॥ टेक
॥ मु परा उ जा रवी ना वार का ब सार
ना॥ प्र जहु न प्रा ये स्वामी त पत बु जा
व ना॥ प्राज॥ मु परा है ां स मा रे ६
ले के पता रा व ना॥ बाल तो पत गये १
तो

रुपध स्यो कावना ॥ प्राज ॥ चोवांचं
दनधिस लना,प्रौ,प्र गतैरमावना ॥ मीरां
तौतु मा रा या सा हरि गु न गांवना ॥,प्रा
जउनकै भागजा गेजिनकै साध,प्रा
येपाहना ॥ २२ ॥ रागसनार ॥,प्रवदे
सनकी वार सोभा माइ ॥ ठाठे रीला
लपीतपट,प्रौठे मुरली,प्र घरि सा

५०
ता॥ मोर चंद्रिका विराजै त सिरि परि
प्रसगुंजन के हार॥ घन गरजै स्रो
र विजरी चमकै नैनी नै नी परत
फुहार॥ सूरदास सामी कु मरेद
रस, ध्रैं भियां भई तन सचार॥१॥ चलौ
नासे हे लो सब मिति हे हो होरै फु तनस्रा
यै सावन॥ उमडि कु मडि घन, प्रातरे

प्रायो लागे जलबर सावन ॥ दादुर मोर
पपिया बोलत लागत प्रति मनभावन
॥ रसिक बिहारी जिन मोटा देसां तो बा
न कर पग पावन ॥ र ॥ बरसन लागी बर
न बदरीया प्रजहु न लीनी मेरी सबरि
या ॥ मेरो पापी जीवरा मानत नाही क
भिप्रां गगन की भिचढत प्रटरीया ॥ बिरहा

५१ सतावै ज्यूँ हूँ न प्राण कै जोत तजि दीनी मेरी
नगरीया ॥३॥ बोलन लागे दादुर खादर
प्राणरी ॥ मास पपीरी घटा उमगि चहु
दिसै तैं गरज त तजि यन रजायेरी ॥ पापी
पपिया पिया पिया बोलै कोइ पिया
कौ संदेस वा नायेरी ॥ हमकौ जोग
भोग कछु जानू जाय मधुपुरी छायेरी

॥कहै बसंत सुजन प्रअपियारे कोई प्रीत
रीत सरसायेरी ॥४१॥ आज गगन घण ग
रजै, आली ॥ सावन, आवन, अतिमन भा
वन नैन न पिया बिन तरसै ॥ सब को पिया
घर माहि सामी री आत रीत उर सर
सै ॥ चंद्र सखी पीया बिं अति बाकु तइन ने
दिन कित विविधि कर सै ॥ प ॥ होरंगा देरज

५२ कुंदीया कुंदयाना कुंद लागे है होमनु
प्यारी ॥ ऋ ही ऋ ली सारी वारापचं
गयि रिवा जा त र लगादेको रकि
नारा ॥ चं पै बसंती और सामासिंदु
८५ री चीर भगादे सनी हजारी ॥ प्रात मा
राम के नर सिंह स्यो मो मोह ली ये है कं
९६ नो गिरिधारी ॥ ध्या ॥ बुनर भीज गई हैसा ८

वरे ॥ मार गाली मै घन घिरि, प्रायौ तें
कां बरन दई ॥ घरि मेरौ दूर गगर सिर
भारी मार गकी भई ॥ सूर स्याम पे प्र ५३
रा फटी तो सासन देष लई ॥ ७ ॥ लागे
कुंद कटारी पिया विन लागे बुंद का
री ॥ दादुर मोर पपिया बोलै कोयल
बोलै कारी ॥ प्रापन जा यमध्ये पुराधा

५३ एतरसतहैंब्रजनारी॥सांवरास्यामी
पियाबेगिमिलौक्योंनातुमरेचरनऽ
बलिहारी॥२॥रसबुंदनबरसतपा
नी॥दादुरमोरपपयाबोलैकोयल
बोलतबाना॥कारापारीघटाउमगि
चहुंदिसतेबिजरीयाचमकानी॥बंऽ
द्रसखाहरिबिनभईबौरीसोचतरैन

बिहानी॥ ९॥ कैसौ मनु रातगायौः
पियासैं मैवैसौ॥ ३ नपियागोसैं प्र
सा कीनी सोब्रजहु नही प्रायौ॥ प्रास
केदिनवितेकीन सोतनविरमायौ॥ सू
रस्यामसैं प्रातकरामैनाह पाजिः
यतरसायौ॥ १०॥ मत्तिवारैबादरछा
यौ॥ ३ माद्रधुमाउ चहूंदिससैं बदरा

मोरेप हरवाछायौ ॥ सुनी सेज,प्रे
ति वा कुल सज नापि यापरे द सन
छायौ ॥ माधोदास लाल गिरिधरबि
न सांवरनु है म न न हिं भायौ ॥११॥ कै
सै कर प्रेंगना कुहा सरी माई ॥ कुं
दैं बरसै,पै रा र बादर गरजै ॥,प्रांगन
कुहार तपिया मोरा,प्राइ लो,प्र चरा

दैननपाई॥ कुंदै बर सैं प्रौर बादर
गर जै पिया कौं मीलो कैं सै जाई॥ जो
कारी कमरा विहु सां वरे तौ मनतः
पतकु जा ३॥ ४४॥ कुमकुमबदरी
या बर सैं, प्रौर पिया विनमैं रोजिय
तर सैं॥ चंम चं मविजरी चमकाई ३
कर मा कत, प्राइ पिया घर मांहीं जा

५५ व़रा किहि विधिकर सै॥१३॥पव़नचै
फुरबै याबै यापव़न चैले फुरबैया
॥बादुरमोरपपीया बोलत कैा
यलसबदसु नैया॥हम कोजो
गभोगकुबजा कैां यहिविधिक
रमतिमैया॥सूरदासप्रभुबेगि
मिलौकौ नांतिरहौ,प्रधिकरसतै

या॥१४॥ उधो जी स्याम सने हीक
ब, प्रां बैं गे॥ नि स, प्रैं धियारी का रो
बि ज़ रा च मकै प पि या कुंक म चां
वैं गे॥ उ मैं हैं गे बा दर च हुं दि सै
किर हा मो हि सैं तां वैं गे॥ सु नासे ज
त र फार ली कामि न बि न प्रभु कौं न
जि वैं गे॥ १५॥ मै तौ प्या ने जा वां मै रा

५६

जगमानी बेतरयां बन कोई ॥ निस

प्रधियारी कारी विजरी ज्यों मां रैं ॥ प्र

र जकैरे सांमानै महारानी राजा

यारे डुगर बैसे पानी ॥ १६ ॥ प्यारी ज्ञा

रैं प्रीतम सरूप निहारैहै ॥ प्रापकते हे

मसि मीन धनुम प्राली सुकपाक

विद्रुम तारैहै ॥ कंठ कपोलकनस

काटके हरकेलत कलाकद्रुवौरैहै
द्रव्लतगनकौउरउरवृजनिधिरा
ईनैंनउतारैहै ॥१७॥ रूपकोघ
टाहोराधारूपकीघटापोअत
चाबगमदनगोपाल॥दामन,प्र
रेदसपरकूटी,प्रलकनउपर९
धरवाआरूपगयंकतमकता९

५ मात ॥ इंद्र धनुष पचरंग सारी ६
परिमल रौ और वारो जावक प
र उठै लाल ॥ प्रत भगवान्को
मदन पाक वारो सुनन सुनन स
बदरि सात ॥ १८ ॥ मेह र वा
वरसै सव मै ॥ चहू और घनघो
र सुहावन घोर घोर मेहर ६

बाबरसै सरसै॥ सुसमंदर मैं पि

या विराजै जगत सपगुनति

परसाजै॥ चहुओर घन घोर सु

हावन अपनैं कीमाम तोल तोऽ

ल मोहर खाबरसै॥ चहुओर सैं

बादर आए अपनैं अपनैं जल

५८

भरिलाए॥स्यामसुंदरमेरेमनभा
ए॥आनंदघनहियलरजैमेह
रबाबरसै॥१६॥रागसोरठ॥काव
हीसमरैनाप्रभूबजमारे॥बीतत
म्रबधघराघरातेरागिनेतसांज
सबारे॥१॥बालापनतेमेतगवा
यौनाहीकमविचारे॥तसनम

सौ।त्रियानसंगराचौ सुंदरसपनि
होर॥कब॥व्रधमयौप्रवहैत
गहाहैसारेपनसौंहारे॥माघो
प्रंतसभैजबप्राईभाईवंधसमा
रे॥कबहीसुमरैनाप्रभूबज
मारे॥१॥प्रानाराभजनहितक
सैयै॥टेक॥सुपनजामजाब्रनज

५८ गमाहीयहमिहहैमनधरीयै ॥१॥
कपरीकुटिलकुरनरजेतेउनकैसं
गपरिहरीयै ॥ तजअभमानकुटित
ताति की साधसंगतमैपरीयै ॥२॥
प्रापतैनिव्रतजानकाहूकूना ॥
काहूतै,प्ररीयै ॥ जानैबिबमैकाइ
लाकैरिडारैसाहबसेताडरीयै

॥३॥ तुम कै आज्ञा न धार रही ठाढौ ऽ
हो कोई दिन भरीयै ॥ माधो प्र
भु सौं प्रीत करै तै मावागरन उ
बरीयै ॥ प्रानी राम भजन हित करी
यै ॥४॥ सोई रसना जिन हरि रस
चाखा ॥ या तै चाम भतौ मुस मां ऽ
ही जिन राम नाम न कहा भाखा ॥१

ह

६० धुवपूताद पियादती रैसं सुनेना
म की सा सा ।। सिव ब्रह्मा सनका
दिक पिपाना रद पी पी का का ।। २ ।।
सिव रा सैं न भगत से त्या रे मा रौ ने
पन रा मा ।। माधो देव दया करे मौको
या र र स की प्र भ ला सा ।। ३ ।। का ब ली स
म रैं ना राम ई वा ने ।। बित त प्रबोधि

चलावाप्रावैंतूमकैसैपिरतप्रया
ने॥१॥मानअतमानरहैयूलहन
संग,प्रातिसूअमानसिहाने॥बा
लापनतसूनापावाताजमपूरक
रैगेपपाने॥२॥बाहतबसांवनगार
वींवरकाकतफिरतसिवाने॥है
तूबठाराहमूसाफरमाधोमन

६१ मैसभमभि सयामे ॥३॥ कबसीसृसै
नारामप्रभागा ॥ पूरनिंद्राप्रर ना
रदिवा मे सौ तैं क्यौं ना त्यागा ॥४॥ सुं
दर नार प्यां प्रीत जा तै सो यर है
गलता गा ॥ यह प्रचर जदे औ रे ह
ता प्रान गये तै भागा ॥५॥ धूत का
पट कल का म कोध मैं ते रा मत है

पागी ॥ माथो प्रभू सुमरे सोई सु
रागेन्न ही क्या वरागी ॥ कवली सु
मरै नाराम , प्रभागी ॥ ३ ॥ काव
ही सुमरै नाराम विसारी ॥ तौद
त्रु कौ मन कुजाव न हारै जमत्रायदे
गलफंता सौ ॥ १ ॥ रैन दिना सुमर
रनकार प्रभुकौ मही कातभाई

६२

सासा॥ प्र रे म त मंद मा न य ह मे
री पा छै हो य मा हं सा॥ २॥ ना म ति
यै ते ग ज ग्रा ह ति रे है प्रा र स्पो
जो री भई दा सा॥ हैं प्रा दि प्र त न ही
जा को मा धा प्र भु प्र वि ना सा॥ का ब
ही रू म रो ना रा म वि सा सी॥ ३॥ क
ब ही रू म रो ना प्र भु प्र भ मा नी॥ की

येकर मकि पावै का सौं साहब
सौन लग षाना॥१॥रैंनदिना वियन
संगरा चेतिनही मे प्रबधविहा
नी॥ जमकौं जान द्वार ही गढौ ते
कहा जीय जानी॥२॥परद्रोह य
रि मार वित्ता की सौभाई नरकनि
साना॥ माधो,प्रवधि,प्रनाह कामे

६३

ईतोकौउननीउनन पढ़िता नी॥ काव
हीसूमरैना प्रभूप्रगमानी॥३॥
कबही प्रभूकौ भजननकीयो॥
सुरमप्रबधिप्रनाहकसोई का तम
रौतुजायौ॥१॥ सुंदरनारीनकौप्र
धकारातिनहीमैं मनदियौ॥ माम
सुधारसब्बाइ बावरे विसियार

सतै पीयै ॥२॥ करपर पचवचव

हुत धनजेरी प्रांधोतेरोहली यौ ॥

को ३ चतेसबहि दत्त माधो चलतै

को छुवन की यौ ॥ कबही प्रभु को

भजनन की यौ ॥३॥ कबही राम क

हौ नामु भसौ ॥ गभंकु पतै को

हौ जाजै नासंकट दूजसौ ॥४॥ स्त्र

पस्वारपकौचतुरसयानोपरमा
रपपगनहाउकसौं ॥ कीनास
तप्रातप्रघयनसौसंतनदेसत
२ घुघसौ ॥ २ ॥ सुदरनारिप्यारीप्रत
जातैसौयरहोमाघोप्रतसुखसौ
३ ॥ ताहीप्रोरलोवजमारेप्रावज
मजासवसौ ॥ कवहीरामकहै

नामुअसौ॥ ३॥ मनतूमगनमः
यौमैंजानां॥ ति रगुनपरदादूर
कियौहैनिरभाय्यबस्तुपहचा
ना॥ ९॥ लोकलाजकेवंदनकुटेसं
क्याने कानमाना॥ प्रलयतूसौ
जवंप्रामनप्रागैसोपदहैनि
रवाना॥ ३॥ जागत्रतप्रवस्थाहैइ

६५ मसरूपासरूपमौद्रमकी मानी॥
सरूसौपतहै जउकेसपालरी
॥३॥ याएकरसजानी॥ सहजानंद
गुस प्रांनंद सरूपाप्रांनंदमै
गलतानी॥ सोभानंद प्रगाधल
मौहै ताहीमाहि समानी॥ मनद
तूमगनभयौमैजानी॥४॥ ८ ॥

बांकीचातपारेराघोजाकबाँकीवि
तवनपरबालहारी॥टेक॥बां९
केउरजरकसकीपगाया॥बां९
कीकलगीपरबलहारी॥टेक॥
बाँकेकीटमुकटसिरसोहैं॥बाँ
कीअलकघुघरवारी॥टेक॥बाँ
केउरमोतियनकीमाला॥बाँ३

६६ के कुंडल पर वंब नारी॥ टेक॥ बाँ
के धनुष बान कर राजै॥ बाँकी
कछनी पर बल हारी॥ टेक॥ रा
म सेवक जी के प्रभू सु प्रसाद
गर॥ बाँका चाल मोहन लगप्या
री॥ बाँकी चाल प्यारे राघोजी
की बाँकी चितवन पर बलहारी

श्री सीताराम जी ॥ प्रथम बद
लि भते ॥ चादर सुबिनी कीनी ॥ प्राठ
प कँमल दल तव रमो चाली ॥ पां तं तले ब
पीनी ॥ प्राठ मासने वंण ताग
गा मूरख मैली कीनी ॥ चादर ॥४
गुर प्रताप संत की संगत, प्रसी
प्र गुरवा कीनी ॥ प्राट नी संक संक

मत मा मैं दिन द स तो क्रदिमी॥
चादर॥ रंकैवोकीवंकैवोकीवे
ढीराजनकासाई॥ सूवा पक्ष
वृत गनकावोढावोढी मीरांवा
ई॥चादर॥ ङ्क प्रलह तादमभाघ
नवोढी सू मेदवनिरमतकीनी
॥दासकवारजूगतमैवोढी।

जैसी की तैसी दीनी ॥ चादर है

झीनी झीनी सदाराम रसभीनी

चादर ॥ ११ ॥ अजौ रघुबर स्याम

जू गलचरना ॥ टेक ॥ उत मै प्र

जुधा निर्मल सरजू ॥ इत मृग

रासात तजमुना ॥ अजौ ॥ उत मै ज

सर यकुमार कलोये ॥ इत मैक

लाये नँद जू के ललना ॥ भजौ ॥ उऽ
तमै कौसिल्या मैया गोद खिला
वै ॥ इतमै जसोधाजी झुलावै पऽ
लना ॥ भजौ ॥ उतमै कीट मुकुटऽ
सिर राजैं ॥ इतमै मोर मुकुट धऽ
रना ॥ भजौ ॥ उतमै धनुष बानऽ
कर राजैं ॥ इतमै मुरली मुख पै धर

ना॥ भजै॥ उत मै ज्यान की जीवं
यैं बिराजै॥ इत राधे सु ष की स्व
ना॥ भजै॥ उत मै चरन प्रहित्या
त्यारी॥ इत कुबजा संग की योर
मु ना॥ भजै॥ उत मै सायर सिताऽ
ति रा ना॥ इत गिरवर न म परध
र ना॥ भजै॥ राव केद स म सा ग

हे दे ॥ कं सकूं मारबलायोजमुना

॥ मजौ ॥ उततुतसी इतसूर साग

र ॥ जुगलचरनपरचितधरना ॥

मजौसियाबरस्यामजुगलचरना

॥ १२ ॥ मजौजसरथनंदनजनकल

ली ॥ टेक ॥ राजादसरथजीकैराम

जीजनमभयो ॥ राजाजनकजीकैभ

इ है ललौ॥ भजौ॥ प्रा गै प्रा गै विस्वा

मीं तर माहा मरु न॥ संग लायें रघ्ना

नाथ बली॥ भजौ॥ गै दोउ कुमर

जनक पुर प्राये॥ पुष्प बि वा य

गली गली॥ भजौ॥ सो रौ धनु भमू

प सब हारे॥ राजा जनक जी कै

इ है भली॥ भजौ॥ प्राइ है सीतां

जैसहेला॥ बनमालापलसा व
ली॥ भजौ॥ हरे हरे गोबरधँग
नलिपाये॥ कंचनकलसभराये
प्रला॥ भजौ॥ हरे हरे बांसनमं
डफ बजाये॥ सखियन मंगलगा
य,प्रला॥ भजौ॥ राम सीयायेडउ,
जौकी पैबठे॥ ब्रह्माबेदउचारे,प्र

ती॥ भजौ॥ पूजत गव्वर मनाव,

तपं कर॥ रामचंद्र बर पाय भ,

ली॥ भजौ॥ राम सेवक जौ के प्रभू

सुष सागर॥ सब ही प्रान पाय

पाय भला॥ भजौ दसरथ नंदन

जनक लला॥ २३॥ भजौ बृंदावनज

य जमुना जै बंसीबट जे पुलना

टेक। ऋषभचरनकौध्यानधरतहै॥
छूटजाईमनकीभमना॥भजो॥ज
गनाकैनीरैतारैबैनचरावै॥म
रलीकीटेरसुनावैललना॥भजो
॥बैठपतालकालीनागनाथे॥फ
नेफननिरतकरावैललना॥भ
जो॥इतमथुराइतगोकुलनगः

री॥ बाचमै रारब्यचावतललना॥भ५

जौ॥ रावनकेदससमसगकेदे॥कं

सकूं मारबहायेजमुना॥भजौ

॥उग्रसैनकूं राजतिलकदीयौ॥

उनहूकौबंसबढायौललना॥भजौ

॥ब्रिंदाबनमैरासरचौहै॥सहंस

गोपायेकहलतललना॥भजौ॥

नारदमुनजाकौध्यानधरतहै॥ से
वाकुंजमेकीयारमुना॥ भजौ॥ इं
दरकौपचढौबजऊपर॥ नमप
रगिरवरधारीललना॥ भजौ॥ चंद्र
सखीभजबालकृष्णब॥ जुगल
चरनपरचितधरना॥ भजौबंदा
बनजयजमुना॥ ३४॥ कुमकचल

तरामचंद्र बाजत पैंजनियां॥ कितऽ
किलात उठत धाय परत भूमलटप
टाय धाय गोद मोगद लेत दसर
थ की रनीयां॥ ठुमक॥ प्रंचतलऽ
र ज, प्रंग धार रबिबिधंभांति सौंऽ
डुलार तन मन धन वार कहत म्र
दु बचनीयां॥ ठुमक। मोद कमेबा

रसाल मन मां मैं सो लेहु लाल, प्रोर
लेहु सचिर पांन कचन भुन भुनी
यां ॥ हुमक ॥ सुसमां के शिब कुं
भगनावरे अतान सबिर कुटि
लभौं हमंद सा हस नी यां ॥ हुम
क ॥ सोभा, प्रभुत, प्रपार नो कब
कहि बरनि पार न ही पावत से

74

सपार ताकै सह सदोरसना सं
॥ ठुमक ॥ तुलसादास प्रति प्रानं
दनि रसकै मुखार एकबरकी
छबि समान रघबर छबि बनिसं
॥ ठुमक ॥ १५ ॥ राग प्रभाती ॥ प्रातस
मै उठि जक नंदनान्मुखननाथजगा
वै ॥ उठौ नाथ मम नाथ प्रानप्रिय

मुपत भवन नवतावै ॥ ● ह सकवत लेकै
रचरि नपतौटै तौटै लेले द्र गनल
गावै सोइ पद पर सत गौतम
की नारी, प्रभै पर म पद पावै ॥
प्रात ॥ उर मैं माल गल मैं तियन
की करि, प्रगुरी सहरि जावै ॥ छंद घर
वारी, प्रलका वदन पर पाग की पे

वेसवारै ॥ प्रात ॥ कनककलस जा
रीभरतायादांतन दांनकरावै ॥ क
लवदनम्र, अनिरमरामको, प्रांन
उरनसमावै ॥ प्रात ॥ संतजनन
कीयहीबानती, प्रारतवचनरु
नावै ॥ कांहुरनावैरामचरन

पदहर अनिर सगुन गावै ॥ प्रात

सम्मै उठि जन कनंद नी वसूवन १

ना पज गांवै ॥ ६ ॥ रेखता ॥ सरजू १

गंगा के तीर कुमार सांवरा सजा ॥

माथे पै कीट कुंडल मान का सैजरा

॥ गल बीच सोहै माल मोति यों दा २

चोलरा ॥ पहिरे बसंत बसंती करमै

कनकरा॥ तांगाफ उसकी क्पाकहुं
सबबा तो सैंवडा॥ तुलसागुलाम
तेरा चरनौं मै प्रापत डा॥ १७॥ श्रीरा
मायनमः॥ श्रीमेरै प्राबेरी तारख
बासा॥ प्रबधिपुरी मधुपुरी द्वारि
कालहरिद्वार भउ कासी॥ कांची प्रा

ब्रजराज,प्रवंता स सपूरा। सूमरासी

॥१॥ तीरथराज प्रयाग गयाजीऽ

चित्रकूट बनबासी॥ नीमखार

कुरक्षेत्र जनकपुर बैजनाथकेऽ

तासी॥२॥ समदर सीषर बद्रीकेत

रनेपाल कंथमनब्रासी॥ वातवाकुं

दनी तगिर माधव जगन्नाथ, प्रबिना
सी ॥३॥ रोहिणी कुंड सेत गंगाजी म
हो दधि दर सन पासी ॥ कपिलदेव गं
गासर संगं मलहमन का वरबिला
सी ॥४॥ पंचबटी पंपा सरि री समुझ
गोदावरी नहासी हरि बोलाकी घा
टी उत्तरे रामनाथ मंभा जी ॥ प ॥ सेः

न

सादरमं ल्हार रंगजी शमम होता पा
सी ॥ धनकत्ती रण्य, श्रीर सेत बंधरत
नागर सागर न्हासा ॥ ६ ॥ जं गजीत
गोपाल पर सम लया गर खुजा सी
॥ हेम पाल गोपाल मे लकीय की स
बरज सी सच्च ठासी ॥ ७ ॥ पदमनाभ
गोपाल जना दैन केशो कत मय न्हा

सी॰ चलत पत घाय लराय लकाय ल
पंच बीर, प्रघना सी ॥ ट ॥ नारायण ए
सर गोपत ला ईहिं गला न कूजा
सी ॥ मनौ करन त्रैतो कना पैलौ ल
गर समदर न्हा सी ॥ ट ॥ न सिंह फु
लार कै दार गंगोतरी योगध्यानजु
गारी सी ॥ मृत्कना ण, प्रौर मानस

सरोवर मान तलायी आसा ॥१०॥ का
म संदेस काम बा देवी ब्रह्म पुत्र
प्रविनासा ॥ करन प्रयाग सकल सा
त्रिजुगी देव प्रयाग सु बासा ॥११
॥ लोहा गिर पुकार प्रभंग सपच
तु भजतासा ॥ गोवरधन गोकुल
त वृंदाबन ब्रज मंडल चौरासी ॥१२ कौ
न

धवल धवल र त जो कान्हर स्याल ज्यु
कहै जस पंकासी ॥ १३ ॥ इती श्री तार
पजावाकी बिष्णुपदपां पूरण ॥

चरननकी महमा प्रब जानी ॥ टेक ॥ नाव
लाव रघुना थपुकारै ॥ अवटयेक न हीं
मांनी ॥ १ ॥ मेरौ तौ कुटम प्रभू याही संप
त त है तुम रेखचरन रजलि पटांनी ॥ २ ॥ ५

फटकसितातिनिकससुंदरीप्रस्तुतकरै
गौतमसंनी ॥३॥ अहकौतूहलदेवमेवाट
यानावतईगहरेपांनी ॥४॥ तुलसीदा
सप्रभूचनपयारचकौअेवटकहैजै
जैबानी ॥५॥ काहेकुंडरेरैनैके प्रागैला
रैनैया ॥ टेक ॥ गंगाकेतीरैठाढेपकारे
पारलगाप्रौमेरेवटमेया ॥१॥ चंनके

४०

व्रत प्रभू पाहु न सेता र ग ये कै सै व चै गा
भे र स काठ की मै या ॥ २ ॥ वे तो ब च्च न हे गो
त म रि स के का ठ की जा य छु गो सैं ने
की ग ढै या ॥ ३ ॥ ला स क हो प्र भू ये का
मां नं विन प ग धो ये प्रभू नां व न्ना च ढै
या ॥ ४ ॥ तु न सा ग्ना स प्रभू च र न प सा
र च के जु गा मु ग रा ज क रो गे गचा रो भै

याकाहेकुंइ रेरे नैकप्रागै तारेनै याभै
या ॥५॥ अथप्रारतातिख्यते ॥ प्रारती कीजेराजा
रामचंद्रकी हरि हरिभावता करेजिनकुंजाबनदा
जः ॥ टेक पाहिलीप्रारतीपहुपकीमाला ॥ काले
नागहैनाथैस्वामी मदनगोपाला ॥ प्रारति
दूजीप्रारतीदेवकीनंदन ॥ देवनिरंजन
स्वामीप्रारनहीदूजो ॥ प्रारती ॥ तीसरीप्र

८।

रती प्रभू मनमाहैं ॥ गसरसिंघासनसींताराम
जा कै सोहै ॥ आरती ॥ चौथी आरती चौदसपू
जा ॥ बतकै द्वारैं ठाढे जी देवा ॥ आरती ॥ पांचम
वीं आरती श्रीरामजीपुं सोहे ॥ रामजी के हरि
जसनांमदेव गावैं ॥ आरती ॥ छठवीं आरती प्रा
वण जावण ॥ कुनकी पूछा प्रभू कोइना
है ॥ आरती ॥ सतवीं आरती वैन रगावैं ॥ नू

तसीदासस्वामीबैकुंठपावै ॥ आरती कीजै
राजारामचंद्र की ॥ इती श्रीआरती पांपूर्ण ॥ ५ ॥ हरि
कीसुरत मोहि आई ॥ टेक ॥ जब संग रवन कि यो म
न मों हन सुध बुध कैं ही न पाई ॥ बीती अवध
स्याम नहिं आये का हु बिरह लै न गमाये ॥ हरि
॥ सात: सहस गोपिकाई न कै प्रजमत बरनी
न जाई ॥ सबकुं छाडि संग कुबिकैं ऊ तक रहे

जादोराई ॥ हरि ॥ साव तही भैरंगगम हल भै ऽ
सुपने भैस्याम जागाई ॥ चौहोंकपरी कीन
हूं नही देखस मझ समझ पढ़िताई ॥ हरि
निसबासरमोहितलफतबीते नैननिंद्रन
हीपाई ॥ तेल फुलेलसमीह मत्तागेपुंगाम
भूतरमाई ॥ हरि ॥ सुरनर मुनिजाकोध्यानऽ
धरतहैं स्योसमाधबिसराई ॥ भगवतदाऽ

सपीयाबिन देखें जन्मअगारथजाई॥ हरिकी
सुरतमोहिप्राई॥ १॥ हरिकुंनचां वैंराधाप्यारी॥
टेक॥ मोरमुकटमकराकृतकुंडलमुरलीअधर
सुधारी॥ पीतांबरकीसबनीका दीनबंधुबन
वारी॥ हरिकु॥ हरिंपैहैरावैचूरीचूंदरीमुरली
मुकट उतारी॥ किपमाय स्पामसखिनकी
सैंननिरखकिरीसबनारी॥ हरिकुं॥ कौतु
कदेखिमोहम्मगअगसैं जोगिनध्यानबिसा

83

रे ॥ जमुना जल डोलत नहीं बोलत रूपअनूपनिहा
रै ॥ टेक ॥ सुर नर मुन जाकौं ध्यावत हैं ॥ सि
व समाधि नहीं टारे ॥ भगवत रसिक पीया तुम
देखै प्रीत की रीत हीन्यारी ॥ हरि कुंज नचावै राधा
प्यारी ॥ श्री रामजी ॥ लागि रहै निसि दिन मन की
अखियां जो कहा जाय छूटकी ॥ टेक ॥ चितलागु
आवौ यों तो सब जगत मांही बरसत तन जा घन
सांवरनकी ॥ टेक ॥ कान्हा पीरे पट भारी प्रा
नी लागी स्याम सांवरे छटकी ॥ टेक ॥ दिनन

हो चैन रैन न हो निंद्रा गपानदास पासो दर
सन की ॥ ये प्रेंखियां जो कहो जाय प्रगट की ॥
बात कै धारैं ठाढे बावन ॥ टेक ॥ बचन सुनत जा
य प्रान दउ पजौं कहो भीतर प्राबन ॥ चरन
धो पञ्चर नोदिक लीनो मांगो बि प्रमन भाव
न ॥ तीन पैंड माहि धरती दीजै परन कुटी
इ का छावन ॥ यह कहि बिप्र कहा तन ममा
गौं कोटिन दहो गावन ॥ सूरदास प्रभु
व नन पत हट ताग पी तन मा वन ॥ वतल हा

रैगौ के बावन ॥ कवित्त ॥ पारवती पति कर तिन्है
पूत पुनीत पुरान न बेद रहै ॥ महिमा मति सा
गर बुध को धाम ॥ दीपै सीस पातऊ भातमैं
॥ गण पति गजराइ के बंध माही का पतो साम
हैस को ध्यान धरै ॥ रागसैं विगसैं बंदू गाए
गुनै रुद्र भवानी सुत सिधि गणेश पाकरै ॥ ९ ॥
पहिलै गुरु गणेश पाको सुत मेघ पराजावि
चरन बंदौ ॥ जाकौ पारिसा पवन रैगपान

बुधपाइयै॥ सुजसकोरामा जपोरहिहाउ
प्रानंदकेसंतनसहायकजगनायकगु
नगाइयै॥ विघनकोविनासनप्रारंभासब
सबकोतोसनको॥ बुधकोदलसनकोसीस
धीनवाइयै॥ गौरीकेनंदजीकोसंवार
केनंदजीकोविवलविवलप्रवजागन
सोसोमनाइयै॥ २॥ काठदवीसंगत
सोतोहोहूकानकाहोतकाठहूकीसंग

तसैं वो उगयौति रे रे॥ सुवाकी संगतसै
गनकाहु मार दीनी काटे जब फाडु जाकौ
प्रानमिलै हरिरे॥ सिबलीकी संगतसे काबी
रहुये दयालभराके सो बकजाये मंदा
दीयोधरेरे॥ साधनकी संगतसौ हनुमं
तहुये दयालभए कहुत दूयाराम प्रा
धसंगतकारे रे॥३॥ जयत जयंत सद्गुरु सम
जयंत सुकुमारऊ तोहन॥ जयंत जयंत जय

कारन जे यतते जे बागउ जारन ॥ जयतजय
त जे बना जयति बं चरब जरंगा ॥ जयति
जयति सावंत जयाति जे सु जयपी कंगा
जजोति जागत जगातित जे जगत इस पाम
नमेरनं ॥ जयत जयति रे वन के हे मी जेप
वन मगा कारन ॥४॥ ॥ प्र सरागा सोरठ ॥ हे
गिरधारी जी मे ते यारा ही के हांवां ॥ टेक ॥
जै पांजी ने तीया र सो म्हा वे तु मत जप्रंतन

86

जीवो ॥ पायो ही सुमरन च रखा पारी ॥ या
रोही ध्यान लगावां ॥ राग रंग म्हानै प्यारो ह
ही सुहावै ॥ और रमन या मुख गावां ॥ तन म
न वाजी पासूं लागी ॥ जग सुख सब ही ब
हावां ॥ आन देव सूं काज न म्हारो ॥ हरि ग
ज मन नहीं लावां ॥ घट के दूर जन सकल वि
जारै ॥ यह हम अपरज तल सुणावां ॥ कृपा कि
पा न जाते नरसिंघ चेरा ॥ आवागवन नसा
वां ॥ हरिरघा री जी के लागा राही कहां

वं॥ राग सोरठ कस नामी॥ हो गिरधारी त्री
म्हानै वेग संभारो॥ जैसें व्रजजब डूबत होरा
ख्या॥ कर पर गिरवरधारो॥ क्रोप पिता
कर बांध्यो लै सुतकूं॥ कर लीयो खरग
द्रु धारो॥ कर ना सु न कर खंभा सें निसे
॥ प्रसुर को उदर विदारो॥ हां सिन होवें
जगमें मेरी॥ दुष्ट नुमा स्वनिकारो॥ क्रमाक
पात ली प्रण जस सुनौं प्रव॥ नरसिंघ सव
बिघ धारो॥ राग सोरठ॥ बसीया डगई

रे म्हारो निरमल हूआ गयो संवाद ॥ टेक ॥ ज्ञान
पवन सै बादर फाटै ॥ कट गई सगरी रात
॥ टेक ॥ माया बादर है, प्रत गह रो छाय र
ह्यो चहु देस ॥ हम रे सै मह दूर गई है ॥ स
तगुर कै उपदेस ॥ टेक ॥ निरमल जोत मि
ली चंदा की कछू मत रहो नाही ॥ अब मह
नी कै सूरज न लाग्यो हूत सत हू मन माहि ॥
टेक ॥ अब मग तै पैसा रन ज्ञानी अब पायो
माहि मेद ॥ मनु वा म्हारो न चल बैठो दुरम

न डारी देद ॥ टेक ॥ प्रांनद सन मन नरास स५
दायो भेटैका छा क पात ॥ नरसिंघदास स६
बी भई सुहागनमि ले पुरातम ला ल ॥ वडु
रिया उड गई म्हारी निरमत हो गयो न्वा
द ॥ [illegible] ॥ प्रथसु तो बनां को पदती पाते ॥
सयो मेरी ताज सरन तेरी प्राइ ॥ टेक ॥ मेरा
वन की पुत्र बधू हु सरनै तेरी प्राइ ॥ मेरा प
तत ह्मे मारो तु हा चर मै दुगी सीसन
वाइ ॥ १ ॥ का दी या सु सभ भी ह्म ण कही

यैतिहारैसरनप्रायो ॥ तुम्हारेचरनमैंदेगौ
सीसनवाई ॥२॥ मरीभुजाकौतियौवत्ता
यैति सकर विषासु नाई ॥ देयमजतासिं
गारतजुं गी सती तौ हुं गा पी या याहीमन
भाई ॥३॥ रामचंद्र तौ मुउठ वौतेसुनियैं
लक्ष्मन भाई ॥ पातिरियाकुं सीसमगाय
दैयातिरीया पतिभरतासताई ॥४॥ मरी
सभानायए वैठेसीसजतियामगाई

मरीभुजाकोलिष्योवतायो,प्रवहसनेभैका
छादेरलगाई॥५॥तैकरसीसघरौगोदीमै
प्रचातापरघुटाई॥भुयपुंछै,प्रारकोरेवऊ
इयादेहीपतिकैसगवाई॥६॥महादेवकी
पुजाकरतैतुमपरवहुतसहाई॥ जोतुम
मागोसोवरदीयातीनलोकमेफिरैहैदुहा
ई॥७॥पिजातुछारैकुलोकेनासाजगमाता
रघुराई॥तीनलोककेकारतमकरतावा

८९

हरिसुं तनै रास रत गाई ॥ ८ ॥ मैं तातु हलरी प्रा
व सरीरी मोपै करे सहाई ॥ भरी सभा मै त
ज्या रायै प्रवहस नै मै कहा देर तगाई ॥ ९ ॥
मेरे सीस को सपदेस सह लोचन नग हमर
प्राई ॥ दोउ कर जोर निकट हुई गड़ी तु हारे
चरन मै दुगी सीस नवाई ॥ १० ॥ लै कर सीस
सलोचन चाली डाताह्निया मग बाई ॥ वठ जा
ओ ता मै दत वा हर प्राई ॥ ११ ॥ समुद्र कै तो
प्राई किनारे हा एक चिता चिनाई ॥ रावन

नसेती प्राइ सको वरसव दे सतदे सतस
हलोचन वैकुंठसमाइ ॥ १२ ॥ सीसमुजास
गसती होगइ नारसचन आइ तुलसीदा
सप्रासरघुवरकी हरिकेचरनमै दुगीर
सीसनवाइ ॥ १३ ॥ राखो मेरी लाजसरनेतेरी
प्राइ ॥ हमसुनी तुमारी वातमेरामनप्र
टवया प्रवदरसनदेप्रपनेमोरमुकट
या का ॥ टेक ॥ कुंअपीरतेरे दरसकी प्यासी
प्रवकोन सुने मेरी वियाकहु मैकासे

मोहिरैनदिनालगीलालतेरीप्रासैलैगरे
गलमैप्रेमप्रीकेफांसूप्रवशापापा
ताकुप्रानमिटावीयरका॥१॥तेरेकार
नकमाईवेहालामिहिवरीपलछिन
नहीचैनसैनोनंदलालामैविनतीसु
नीयौकाहूकुंडनगोपालातैरीचित
वननैगोपालालाल।घरघालालमकी
लोवेगसहायमीरहैमारीनाहिस

वजुगकाध्यानत्तात्तघटघटका ॥२॥ तेरी
सांवरीसूरत्तमाधुरीमूरत्तत्तौमैंहि
हि प्यारीतोवारवारतिसमैंजेसकमन
प्यारीमेरापरदात्तैरेह्यायमेरयंघट
का ॥३॥ विछुप्रभुजमथुराकेवासी
प्रावेपासकमनकुनिजधामाजा
ता नवरनावो,प्रवसीसपाकुंवत,प्रपन्ना
दियतावोयाहिराजतेत्तेंकरकैसमु

आवो, प्र वकोई ख्या त करै झट पटका

॥ हम सुनी तुम्हारी वात मेरा दई, प्र टप्या ॥ त

श्रीरामजी॥ तुम कहां ते प्राए जंग जंग, प्र त सप्र

तसा नो॥ हम प्रभु पहचाने प्यारी, प्रअंथिया घुमा

रभरी॥ त टपेट पच्च सव रो पगिया के पगन ९

धरन ॥ हमिगा॥ जावो जी जावो तुम कुछ इके

न जावो जहां तुम्हारे संग॥ तुम कहां ते प्राए

॥ रागु प्रभाती॥ मेरे, प्राय भोर भैरे, प्राय भोर॥

प्यारे वाके सव निस जागै मेरे, प्राय भोर॥ सा

चीकहौतुमैवाहीत्रियाकीसौंह॥ पायमहोप्र
मरसचारहमृतातुमकोसरवसदीनौतुम
होनिपटकगेर॥ प्रानदघनरससवरसरस्सेरा
येक्षयरहैवालीप्रार॥ मैरप्रायभोर॥ राग
गौरठ॥ विहारीतेरैनैनासुफारे॥ निरखि
मप्यारीराधेकेप्रनतननैनटेरे॥ तुमको
सारसमृहकिसारीउमगउमगप्रकुरे॥
ललितमेहिनीसीनीजावनतरस्तरत
प्रेरे॥३॥ प्रकोहिमैंतेनाहिवेनै॥ विपनविद

रनसुमहोगिरधरसु सेमैं मित्रचमे ॥ मैंप्राणी
न कछुन ही जाणौ तुम विन कोनसुनै ॥ कसै
ही कर पारतगावै व्रजुनिधि सरन तुही ॥४
प्रथगुरु समहहमातै अथति ॥ ॐ गुरुसमान
गुरनाकाइ रानानाति नंदयावता
ई ॥ उकाराम्रवसतनंभि ताकीयावि
वरागुर कीमहिमाकछ अपरमपारा ॥
कछविण भरगुरु विनध्यान ॥ गुरविन
कावहु होइ न लोकतपान गुरमाहारा

जा गुरदेव न केदेव ॥ गुर स्वामी सेन गुर
कल्प व्रक्ष ॥ गुर चिंतामनी ॥ गुर प्रतापा
वस्थ ॥ गुर पारस पनैं सा स्पर्स मिले ॥ गु
र पारस को वनैं छेनि वेर ॥ गुर को प्रेव
गुर तीर्थ भा कुरी ॥ गुर गंगा गोदावरी ॥ गु
र पान धान गुर नेम धरम ॥ गुर पा
र ब्रह्म परमातमा गुर वंकासि र जैसार
जन हरा ॥ गुर सेवा लगु प्रापहि होनी

यहि सी स्यरु मेदव ही ती कुंदी नी ॥
रषि नारद प्र नप्रेसी कौं नी जायजी
ह्मा ॥ मर कुंतिसौं नी ॥ मन बिचरु मह
रना परु नां हि चौरासी सं तुरत व चा
ये ॥ गुरु को व कम प्रेरु प्र व नासी जा
सु कोट जम की फांसी ॥ गुरु रन जा क
बुन ही जानै जा की पौ रा प ॥ ग मस्य
र प र मा नै ॥ गुरु जो रा वर की या प्र

धीन॥ जा मवतायो माहि को सीना॥
सात बूंद तैसरू गारै सोइ उतर सोना
है के: के: होइ नरवा सरवा पूछा
करै विना मारे मारे तारि॥ स कर
बाहेसु नपारवती॥ हरि को द्र है
सो गुरु को ग्राही जा को मुखदूसा म
न कोई॥ मुख वै बकर तो कहि जा
स्वच्छ: कातंका हूर मल मेहूर विद्दार

कै कौ जै हरि गुरु कौ संग॥ गुर की
महिमा अपरंपार॥ नित गावै सन
कादिक सारा॥ गुर की महिमा वरनी
न जाई॥ श्री सुखदेव जी अपने मन
गाई॥ गुर की महिमा पढ़ै औ गावै
जो नी सकाट वहुरन पावै॥ जो पावै
तो हरि को दास कहावै॥ इती श्री
गुर महिमा संपूरण॥

25

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ राम[illegible]वांम
दिसि ध्यान कौ नंमाए दाहिनो अरध्यान सकल
संगात करन सु रत नमन हसो लोर ॥ १ ॥ बीजध्या
नंड य रवि माहि तन सोत या मयंक ॥ अप
टत हो नहि तमम सोमनवित नरहित अंक
२ ॥ अथ रसअरे मचेलाकौ गुरकौ
संबाद लिख्यते ॥ आदेस एकोंकार कूं

२

प्रलमनिरंजन एक॥, प्रजरप्रमें, प्रवचल, प्रत
ष सबुघट पूर एदेष॥ वजाजी एकनिरंजन, प्र
कितलोकमैं एजोरुप, प्रापार एकपुरष, प्र
वचल प्रविनासी एकोबूलविचारा॥२॥ एक
जोतमौ, प्रविगतलालानिरंकारनिरतेसा
का जिनेंथापानचोरें जोगीजनमौं प्रषम, प्रादेसा॥
१॥ दूजा चावतउप जियासिष्टरचनकर
तार॥ पवनरूपसे जलभया तौनाभकमं

तउपगार॥ बवाजीनामकमसैंबंद हाउ
तपतसिष उपावनहारा॥ जलऊपरतिन
रचाप्रथमीकी नूर सकल पसारा॥ चंद्र सूर
के पवन रूपानी कीन्ही तावप्ररूमाया॥
कर दूजा आदेस बवाजीन यह जगधंधेला
या॥२॥ तीननेत्रमैंसिवभएरचा सकलसं
सार॥ तिरनुन सै माया रचा जलथलपवनप्र
कार॥ बवाजी जलथलपवनप्रगास किएति

नस्तुरगमि रजपाताला ॥ रजगुन सतगुनै तामस

सधारी तरुण बुढ पाछा ला ॥ घाम सीत बरखा

सत की ह्री प्रात दुपरी संझा ॥ करता ता, प्राद

स ब्रह्मा जान रचे, प्रंड बहंम ॥ ३ ॥ चार बेद

चारौ बरण, प्रा ष्म चार समान ॥ चार प

हार थजं बमिते सतगुर हो यदयाला ॥ १ ॥

चारौ पन, प्रवस्था चारौ चारौ जुग पर

वान॥ च्यारदिसा च्यारौंयुगौं चत्रभुजी भग
वान॥११॥ च्यारौं मुषसैं ब्रं ह्मांउचरै गाव
तरीय मुनिदासा॥ करचौथी ब्राह्मा देस बड
वाति।नियह जगकिया तमासा॥४॥पं
चतमै पर पंचतत जकाडसमा, प्रभमामत
॥ पंचभूत हूव सकरै पारै पद निर्वान
॥१२॥ बवाजा पंचैतत्य मिल रचाभूमय

त पांच तत्त का काया ॥ पांच तत्त का व मा
रूत त्ता पांचौ इंद्री गाया ॥ १४ ॥ पंच को है जे पं
चौ पंद्रा पंच मुआ कै ता सो ॥ करपंच म ज्ञा
दे स वा वा तिन की ग्ला ल ख चौ म सो ॥ ५ ॥ १५ ॥
खट रस भो जन का इके खट रस सब बी सा
र खट द रस न मै जा ये कै साधा जो ज प्रपा
र ॥ १६ ॥ ब वा जी गा य म पाव सम र है म
त त स सिर वंस न बिवाद ॥ तज खट पट ख

टजीप्रपनेसूचलै वेद मरजाद॥ १७॥ सटक
रमी मट दरसन मट मुमगावै मुमसैं बानी
॥ कर मध्य मप्रादेस बवाजिन की [illegible] रिस मु
नि ऋग नी॥ [illegible] ६॥ १८॥ मनवचन कू मानकैसिं
धुव डे मरजाद॥ सती सत्तपाव मजनैकाडवि
यसत साद॥ १८॥ बवाजी सातैं बारसिद्धके
सातैं सप्तखंड बिस्तार॥ सप्तरिषी प्राकासवि
राजै जिनकातप है भार॥ सातपातालसूरग

हैं सा तौं: सत्ताविस्वा बा सौं कर सप्तम, प्रादे ऽ
सव ढ़ा जिनकी ढ़ेसुरतेती सौं ॥ ७ ॥ १२ ॥, प्रा
ठगा ठ से ली गले हद जपप्रा ठो जाम ॥ प्र ख ऽ
फ्र ली मै से सहै नित तपे स हं सर नाम ॥ २२ ॥
व ढ़ा जा, प्रा ठो रि ज सि ज है, प्रा ठो, प्र ब दे व़ का
र से ना ॥, प्रा ठो दि ज पत्र ख मौन नमैं, प्र ख म,
ता है दवा ॥ २३ ॥, प्रा ठो घरी, प्र ख म हु र न मैं प्र
ल खना म उ र धारा ॥ कर, प्र ख म, प्रा दे स व वा
जिनकी ढ़े मार, प्र ठारा ८ ॥ २४ ॥ नौ फ़ न प

तनैनादिपतिजिह्नकाहरिसूहेत॥नौउ॰
नाथभयेयेएकदिननौअति.इसमेत॥२५॥
ववाजानौभावैतसुदाहूप्रघटेरामचंद्रअ॰
वतारा॥नौदूरगानौभंडप्रथमानवनक
रैनाश॥२६॥नौनाशनैगिरहदेवत्ताभ्रम
कारजमैभानौ॥करनौभाप्तादेराववाजि
नकीहूदेवसुदानौ॥ट॥२७॥दसदसन
दसहारदसदसौदिसादिसस॥दसैंमेव

सिन्याम न्याका ज्ञार वाकौन ससपा॥२८॥व

वाता दससीकूं जिनपूजेद सहकूरा गावनराम

नैकीकूा दससूय मारेजा यनिसाचर राजूवि

भीख एदासा॥२८॥ दस,प्रवत्तार दससकी

पूजा गाव संकरसेसा॥ करदस वा,प्रादेस

भजन त्रिकूगुरूदिया उपदेसा॥५०॥ इता

स दस,प्रादेसअर्था॥ यूष गुरूचेलाकौसं

वादलिख्यते भजनलालकृत॥ चार्ति

साकूं देष करचारौं कौने देष ॥ मध्यलोक

देषो समधिर जोगी का भेष ॥ उत्तर पछम

देषा पूरब भूं मधुं थान ॥ प्रगन को नने ईस

तलेवा य व फीर देषा ईसान ॥ बृज मंडल

प्रम मारवार समफीर देषा मेवार ॥ पंजा

व जाय कार है सकमाया संदर देषा नार

॥१॥ गुरु बोलना नारे नारे है वातलवरस

न करो ॥ सिष बोलना ॥ पूरब व षण्डां ॥ पू

रबदे याजायकर पुत्र प्रजुध्याधाम॥ ठौर
ठौर सरिता उदधन ही पावैविश्राम॥ पूर
व वैमै एक प्रजन्मोचनाव हुतवालगतापानी
॥ मासममकी ताभोजनकरतेवडवेडदेख
सानी॥ कासी गयाप्रयाग देषकर सब
तीरथमैन्हाया॥ पूरबदानाकोडवन्नामै
वंगालेकुंधाया॥१॥ प्रगिरकैानवरणं
जा ॥ वंगालेमैंकरआनाविरुवाभांत॥ वंगाली

काल्हेसवै नारपुरस्य एक जात ॥ करनाटक
तेलंग देस, प्रसमुल क काबस [illegible] भारा ॥ जा
दूटौना घर घर दे साधु की मारी जंग[illegible]नाथ
के दरस करे मैं, प्राया ऊवादेस ॥ बंगाले कू देस
बडा मै पंहुचा दषनदेस ॥ ३ ॥ दछिन वर्णनं
॥ दषनदेसा जाय कै वसै दषना जार ॥ षोट
टवाजरा राह रवबरे भोजदे जार ॥ दषनदेसस
न माया की वडा, प्रपचला नारी ॥ टीकावि

दीमांग ग सवा रैं सिर पर बाढैं सारी ॥ सिैव का इष
देव की पूजा घर घर देखी सूरत ॥ दष्यान दी
नी छोड बवा मै जा कर देखी सूरत ॥ ४ ॥ नैसु
तव एिनं ॥ सूरत की सब सैर कर फुरी द्वार का
देष फिर प्राया गुजरात कूं की छाप्त लष प्र
लेष गुजराती किरिया मै चौक सिव का कि
रैं उ पास माया बचन हार गई उन सै करती
सदां निवास ॥ कठा लोक प्रस भोजन मोटा

सूपरसापरवोल॥५॥पश्चिमवर्णनं॥प

श्चिमदेसीजायसवमहास्वारथ्यालोग॥

पानीकातोरावड़ाकादरावरभोग॥पश्चिमदे

समुरहकीधरती॥जनसभीपहरावै॥विक

टभुमजहांथरेतनकेवांहनअटचलावैं॥

जोगेस्वरजहांकरैंतपच्यापलबपुरसकी

पाया॥पश्चिमदीनाकोउववाभैजववाय

कूंधाया॥६॥वायव्यवर्णनं॥वायवदेसा

जायकारकूं लूं प्रसभट नेर ॥ तारथव उरावा
तसरऊंतन लागादेर ॥ गढपट्टन प्रसऊं
गसयाला भूलकावसै गङ्तजार ॥ राऊं
हीरजहोइस्याहुये जानै सव संसार ॥ म
द्रीसेरगां वजाटनेको वेटेहू सन की याव
॥ वायवदीना छोड ववामे उतरगया ऽ
तुरकान ॥ ७ ॥ उत्तरवर्णं उतरदेवाजाय
कैकावन प्रसवदार ॥ प्रटैपारकिरिया

103

नही तुरकन नकावौहार ॥ गऊ गाजइ

नोम्र सुसुम स्पा जादे षाबलक वुषारा

॥ कतल बाजकिल माकर उजवक प्रस्थो

जा जसार ॥ षानपांन लेनान दिषावै दया

धरम नाहि लेषा ॥ उतर दीनाकोइ ववाई

षान कौन जादेषा ॥ ८ ॥ ई षांन कौ षाव

षीनं ॥ ई षान कौन मै जाय जब देषि गिरपा

षान ॥ बद्री नाथ माहा राज कोजो गेस

रघरध्यान ॥ ईसान कौ मैं मै सिव का बा ऽ
सा महादेव कैलासा ॥ रुंड माल माथे ऽ
पै चंद्रमा, अंग विभूत उदासा ॥ जो कोई
इन सें ध्यान लगावैं संकर हैं रि ताकी
3 ॥ ईसान कौ न कूं कोंबा जब उतरगया
पंजाब ॥ ८ ॥ अथ देश पंजाब लिखं ॥
पंजाब जायदेसा सवैं तुंब, अंक कसमीर
॥ पिंडे पाया ला हौं कूं छोदे सू मर र घकवा

र ॥ पंजावा मैं सवही देषा वडी, प्रप
स रा नार ॥ सपद दिषाकार इ सकल ग्या
वै ध्यान लिक रै विचार ॥ पंजाव जीतक
र कैाई प्रायादेषासि ज विवेकी ॥ सानंद
पिटालादे षकै देषववा मै मारवार जादे
षा ॥१०॥ मारवार वर्णनं ॥ मारवार सव
देषकै देषा गढ गिरनार ॥ हिंगलाज दे
वी के दरसन जिसका नप, प्रपार ॥ मा

रवार मै पहुकारतार थप्रसदेवा मेरवर॥ऊँ
पुरसहरहुथरदेस मैव सैब्रुवज़ाजार
॥हनुमानकी पूजाघर घर सवही रामकु
पासा॥ मारबारकूकोउकवामैजादेखेव्र
जवासी॥११॥ व्रजमंडलवर्णन॥ व्रज
मंडल मै प्रानकरकी हुजन्मसनाथ॥
मथुरापुरी कृष्णकी पूरत प्रसदेवाबि
संरात॥ विंदावनवनदेवदेखबैसाख

नमिसरी आना ॥ राधाकुंड गोवर्धन देखा
नंदगाम बरसाना ॥ कुमनाडिली प्रापति
राजै देवनं प्रसूत गाई ॥ ब्रज मंडलकुं का
ढबवादिल्ली कूं सूरत उठाई ॥ १२ ॥ दिल्लाव
तीनं ॥ दिल्ली राज दलीप की जानि गंभोदास
स्थान ॥ पंडोन की छत्री बनाज मनाकार
प्रसन्नान ॥ दिल्ली सहरत अजवादस्याह
ही जहांवसै साउकार ॥ गिरदपनामा

रामहलायतसुंदरवनावतार॥ निकट॥
कालिकादेवावैठजिसकी पूजाप्रादि॥ जो
गमायाकेदरसकारमैप्रायाफरीदा॥
बाद॥१३॥ फरीदावादवर्णनं॥ सहर
फरीदावादमैसुंदरदेखाताजबामनस॥
पीप्रापविराजैंकररसंततनपतपाल॥ से॥
सफरिदनैसहरबसायावसैकतासैं
जात॥ बाराहरुपकासरुकवराहीजि

106

सकोलैग तुजात ॥ दूरदूरकेजातापावैं
सवलोकरैकराही ॥ हाथजोरकरभज
नकैरतुमकपाकरै । योमाइ ॥ १४ ॥ व
र्नमगढवर्णनं ॥ बल्लमगढमैप्रायक
रदेषीप्रजवबजार ॥ रामगंजदेषासह
भीसुंदरवनावजार ॥ रामगंजमैरामक
बागहैरामसरोवरन्हाय ॥ दत्तीदेसी
बागसबदेषेफिरभीतरकूप्राया ॥ दे

भकच हराम्ह वमु सा हो मँश्रा जव मन
माया ॥ सीता राम के दर मन का रे जव
पोषा प्रपना काया ॥ १५ ॥ इती श्री भै
लानकृति वेलाग रु कै संवाद सं पु
रंग ॥ श्री सीता रामजी ॥ प्रथ दो प
दी कत सोति ॥ रा सो पति गि रवँ गि २
२ रधारी ॥ मैं तौ ना यर हौ कछु नाहीं ॥
उधरन मोय प्रना थ पकारी ॥ प्रान

बिनापंडव सूडे लतत ॥ भामगदाक
र ते महि डारी ॥ ह रही न पैज प्रव
ल पार य ॥ जब्बधरनि धर्म सुत हारी
॥ रूप सम्हर्ह सुभट सब बैठे ॥ भीष
म द्रोण कर्ण व्रतधारी ॥ काहि न सक
त मौइ बात परस्पर इनै पति तन मे
री, प्र गति विचारी ॥ लाज गमायदा ः

सदासिन कीव हुरि कासा ॥ कारि हौ १
बनवारी सू रस्पा म पाछे पकिते
हौ मध्य सभामे होत उघारी ॥ रा १
जा ता मानौ बचन हमारौ ॥ पांच १
गा म पांडै नकुं दा जै त्रौ र सब राज
तु म्ही रौ ॥ दग्नि णा सा हित दिल्ली बू
दीजै पूरब सा हित बंगा लौ ॥ गढ ६

गिरिनातलहस्तिनापूरवैठकजा
मैकालगतहमारो॥ तमकिउठेदु
र्योधनराजातौसौकहाविसा
रौ॥ प्राभिरिजाति,प्रहारकौतरका
गायचरावनहारो॥ भूमिनदेउं
सूईकै,प्रगजैारएसंग्रामसभा
रौ॥ पांचौपांडवप्रसारबांधौको

जातै को हारै ॥ त्रसै निरंध त्रधके ऽ
जायेलो पाब चन हमारै ॥ सूर स्या
म प्रभु भरी सभा मैं न पति मैं पनपा
रै ॥ १ ॥ कारी गोपाल की सब लोय जो ऽ
८ जा मैं, प्रप मैं पूआर य, प्रति जू मैं
है सोय ॥ साधन यंत्र मं त्र उद्यम
कलजे सब डारे धोय ॥ जो कुछ लि

सिदा नैं नँदनंद मैं ठि न सकहि नहि
मोय॥ दुःख सुख लाभालाभ सम कि
जिय कियै मरौ गे रोय॥ सूर स्याम का
रण मय स्यामी स्याम चरन चित
पोहि॥ जो मैं हरि रहि न प्रसन्न गाह
उ सौ लाजैं गंगा सौ जननी रां तनकु
सतन कहां अं दोउ दल महार पा
र खै औं कपि ध्वसहित तउ डाँ कूपरशा

राम की विद्या प्रघटौ मि जकु लकोल
पाचठां ॥ ३ ॥ इ तनाकरैंन सपथ द
रूपा की जनागति नहीं पाँ अस्या
भसक रैवरण विजय भूमि मै कांहु
न पावि दि खंवाऊ ॥ इती श्री द्रोपदा क
त स्तुति ॥ कवित्त ॥ संपत सुरेर पाकी इ
सी ॥ वृद्धि श्री गणेश की सी रूद्धि हु

धनेश कौ ॥ तुम मैं बिराजियै ॥ धीरज
जलेश कौं सौ ॥ वायु है हृदय शकौ सौ
॥ सत्य, प्रब्ब घोष कौ सौ निसद नाराऽ
जियै ॥ सं पत्ति प्रजेस कौ सौ ॥ कीर्ति बि
क्रमेस कौ सौ ॥ प्रभा, प्रौ मघेस कौ सौ
॥ कवि न सौ कांतियै ॥ श्री महाराजकुं
वर धर्मसिंह वैभव तिहारै देख औरस

व भूमिपति राम मौरें त्राज्ञियौँ ॥१॥ बक
सवितुं ऽ देत घोर न केऊं ऽ देत ॥
मृमा नकेमं ऽ देत कव हून था ऽ
नेहै ॥ धन देत धाम देत कोम प्र ऽ
भिराम देत ॥ री जरी जगाम देत
दाम मद खा के हैं ॥ मान प्र रूपा
न देत ॥ मान सनमान देत प्रीत

सौं न जानदेत ॥ पाइये सुधा को है

॥ सुनिये श्रीमहाराजकुंवर घर

मंसी तेरी ये भुजा के प्रान श्रेसे

ये इतलाके हैं ॥ ८॥ सहज ही सीतन्श्रो

जंगजु रै श्रवर वीलो महाजसको

जसोली चुतनश्रा मंद को कंद है ॥

सुजाभुजदजन सों अतनुको ॥

दत्तबंडत्तमञ्जलमालीपनुमैंसरः
सरुगंधहै॥ तद्विनकहैहाथवी
रबामहैश्रोदानहोऊपारथस
मानसोहैरुअमुथकंदहै॥ या
ववनारिद्रवतवंडरघनाथनंः
दऊप्तरश्रीधरमसिंघपूनोंको
सौन्वदहै॥ ३॥ रवासेसकतमनस

ना कों मराहत है ॥ माहि पै मा हि पम
न मान तमाला इ है ॥ मीति, प्राति नाग
र प्रतीति सिवही के उर ॥ कीरत की
वे ति यान ज ल सां सि चाई है ॥ वैं हैं क
विना प मा हा राज प्रन स द्वा सिं हु रा
मी ति ह्य रे भा ल लो हा ति सु हा ई है
॥ ४ ॥ कों न विधि भु पु वो ज स र व रि ५

पावै काह रूप गुन सील जस पर
ताप सीना को ॥ प्रदब द वाइ ते दव
है उमगइ जाने ॥ ओर हू दवै गेप क
त दैव द्विज वा नी को ॥ कहै कविना
थमा हा जम्प्रासा हिव सिंह ना कीम
ति रावन न करि रामा को मरोसो तु ६
है पूरन भवा ना प्री म है सम हा

रानीमै ॥ ५ ॥ जौ लौ मनसू क्रम भ
मतनै लौ लौ देवसरिया ॥ जौ लौ
बिंदा कंस्फ ब्रंद बंद तपा वारबिं
दबंदा बसंद कण्या स्थ्रवनमरि
या ॥ जौ लौ वेदवानाज ठासंवास्र
वानी ॥ जौ लौ ना षूराम
भिकाज ना मत दिया ॥ तौ लौ जन्म

गद्दितम हाराज श्री रामसिंह भूपर

भवानी की क्रापा राज्ज करियो ॥ ६ ॥

दोहा ॥ कवि को विदसि व हीं काली

मै है जामतसिंध हु कैरस ॥ दानमा

न को सर है श्री नाहरसिंह नेस

॥ ७ ॥ कवित्त ॥ प्राग तगौ तनवंश

म मै जिन वंशान नृ उपजै वस

114

री॥ औरमधैविंथारपरैवसवौक्यो
नादैहरिविंमधुकसरी॥ कान्हबजाइ
यवेनीवानपरीऔरमोहिभरा
वतकैप्रभुसुनी॥ औरकौवसवोहूका जे
मैप्रभुतत्तोवजतबैरनबासरीहूक
सरी॥ ६२॥ अथराधकाकौविरहलख
जातगजराजसातिवेहकौदिपक

वातह्लवरषभावपतिसतुर्वत्लवा
त्लसौ ॥ वेसौद्दामंवहलसद्बेसिवुव
भरविरैभैटभायेप्रतिमक्षभात्लेन
अजात्लसौ ॥ त्लाजसातुवत्लवाम
सोचपोवभयभामजाह्लभवुत्ता
नवानत्लोचनविसात्लसौ ॥ प्रेभवा
मवचकसिसाहरासणाधवात

जीसर॥ तीरणा प्रातमदनगुपाऽ
लसौ॥ १०॥ कौन पनहारी ताते भई
पनहारी है॥ प्रथम तौ पनहारी प
रमोहप्रसंगाकी यौ दूजै तौ पनहा
रीवांजनवेदमविचारी है॥ तीजे
पनहारी पीवसंगनासिधारीऽ
कहती नेपासितावपांचोपन

हारीविध्रवालोयवत्तकामहती
प्यारीहै॥ ध्यौपनहारीसरम
सवतजदीनीसातेपनहारी
यातेमइपनहारीहै॥ ११॥ श्रीव
जीसहा॥ प्रथमतनतिष्पेतजोसम
मसपहै देषतकौमारप्रगीयाक
टनकाटारवकीजाके रसमकीधारी

116

॥ ख्याल प्रसी सुंदर ब्रजनार ग्वालिन दान देरी ॥ १ ॥ कब कब के दानी हुये ब्रज के बैठू का ये दान ॥ त्रिबी ...पा, श्री राजा कंस की जब देह रही के दान गुजरी दान देरी ॥ २ ॥ कंस कहां को दानी या जाको कर रोग मान ठोकर मार कंस कै सर घेले हद ही को दान ॥ ३ ॥ एक टका की कामरी

वडे वडे बोतै बोत ॥ व लधनके गा

लका पिरातुमकरो हौ रत्नको मोल

॥ ४ ॥ तीनवरनसारी वनीलहगाके

समसुरगा ॥ एवेटी व्रयभानकी ते

रैसोहतगोरंष्रंगा ॥ ५ ॥ मोरको चंद्र

वासिरधरे कारी कामरवोढ़ ॥ प्रे

प्रेरकोरावंदप्रहीरके तैनैका सेव

लाई सैंन ॥ ६ ॥ बृंदावन की कुंज गलिन
तट जमुना के तीर गोपीनु सौं रस
भरी ताहि बिबेकव प्राई पी ॥ ७ ॥ बृंदा
वन की कुंज गलीन मैं तरय ना के ति
र राधे की भर की काटिबे का हू
पौर रस भान की ताहु ॥ ८ ॥ बृंदावन की
कुंज गलीन मैं तर जमुना के तीर सु

रनरमु मलैजै कैरेगुणगावैंदेवादा
स॥ गुज्जरी दानैदरी प्रुरी,प्रसी परम
संगु रखत्रु नारखुबात लनदानैदरी
॥ प्रणप्रारसीत्ति च्पेत॥ गुज्जरी गुज्ज
री चंचतविवतरत्रिजकीनारीरिमजी
मसेतकी याजिरागततसोहिवंद
नकाहिरा॥ मोहनमरकीसीस

118

नीलरतिजैंऔरसी वदनबिहारैं
औरदोनैनासुरमासारती ॥ सुनन
कुनक पगनवरवाजैंवनीगुजरी
घरसवनमैं ॥ औरतैरपगपायम
मनमारती ॥ नयनकुचटमैभालव
तावैनैनादाविजनीसजमनसावती
॥ ऐसैंब्रजनगजरीसैवयसंगार

तेरी ग्रार सखी ॥ १ ॥ रहे रहे हो कालु मकैसें बो
तो गउ चरावो बन मै ड्रोलतो ॥ ग्राय प्रचान
कर्यु घर भ्रेतो ॥ ये दइमारे कैसें बातो
मत्ती भांत के देखे भ्रा तेम हरखे री दसु
धान पातै ॥ ग्रार तो कुं लगी पवन दिन च्या
रकी ॥ भरे पट तो कुं लगी ग्रार घाई दाड
नै कहमैसें बितराई ॥ ग्रार मेरी सखी सां

करै हैं विमारसी॥ प्रचलता दोड्ङानदै का
हूलमुजै नलीतोसु लावैतैरी फारसी॥
एवूजवासी कालून ह्योनामैरी रत्तबजे
रातप्रारसी॥ २॥ गुजरी गुजरी गढगो
कूलसैं चंद्रावल्त ग्रमकी॥ जातु वदलमै
विजलीचमकी॥ की पासिंगारधरसिरम
रकी॥ वणजकारनचलीमथ॥ रानगरी
सिरतैरदयनीचीर, प्रमोहना॥ जरदकिना

रीउदा चोता वायरहा दत्ती यन पेजो दो
प्यारे दा फुलनरी सोहे हार की ॥ रंगलाल
जोवन वसकी मा तु मैस पसाहु वो
दीया ॥ प्यार क्या कथना क्यूं ते रे सिं
गार की ॥ चरघु घर मै भाव वता वः नै
ना से वा ए विरह के मार त्ती ॥ ए चंद्रा
वलकु जरी मै नैनो नही देखी लंगरत्ते
री प्यार सी ॥ ३ ॥ कानुहाजी का हांकसा

भेजा तब अरु और मत जानो दई देवता
वंदीयान ॥ उनदेवन भेवं दनगाढे पो
तपोत्लिया द्वारै ठाडे ॥ और उनकी, प्राक
पहर देवी वह हारती ॥ तू स्यावा तक
हे तू जमारे रातफा रगाया जमुनापा
रे ॥ और वाके साकुं षवरन सारकी जा ९
यद सोधा धायत गाई ॥ देवी झुंदो वात

करतूई कोतू करारकी ॥ एक्रंब्राकासी
काम्ह योनामेरीरत्नजरा उप्रारसी॥
प्रारसरीगंडेकामाडनशेभासुरंगा
हैसिंगारकी॥४॥काह्लाजीकाह्लाप्रा
रसरीमेरीघनीप्रभाती भैमाडे सु
कधीनयोतौ॥नंदनंदनजीकेद
तकेहैयाघडवाईतोलागीडेठह

जारकी ॥ प ॥ गुजरी गुजरी सब सखी
यनमै नु सिरदारै ॥ कुमकच्वैहैं ग्रोरऊ
रमर मारै देत्तीन दान लगावहतार ॥ ब
नु र गुजरी घरीसयानी भर जोवन
भैफिर दिवानी ॥ ग्रोर तर लंगर फुल
रही फुलावारसी ॥ घुंघट पोलत ग्रम
रसचाखु एक रैनबृंदावनरायु ॥ ग्रो

र तेरी देही देखु पतली तार सी ॥ सोस
पूत सुम चंद्र विराजै नैना दीवा एक
टारी सार की ॥ एवं द्रावत गउजरी भ
नै न ही देखी तंगर प्रारसी ॥ ६॥ का ५
हूजी का हूकं सासे जात मप्रार मत भू
तो ॥ कैसे काम मरने के सूलै ॥ हुकम
सं फुरमाउ मो सु तेरी आत कढाउं

122

नेहसुं ॥ आरमेरे काह नेहीकी रीत ५

सुंकाडेंअंग्राखनैंदेत जोरेडेरैंदेवताके

तीसक्षिरोरे ॥ प्रारत ५. कातरी कयावुना

दूपी इत्तनीजुवानीमत्तकरेकाहुंपारा

नहीदेसीकंसद्वारसी ॥ एवृजभासका

हूंधोनामेरीवतजड. । उप्रारसी ॥ ७ ॥ गु

जरीगुजरीजामासाकीमरवडाईमेरे

प्रागे कंस विताई मैथयनी यर सेराव ॥
मोरे प्रारनाथ वासकसे काते ॥ प्रारछि
न की, प्राखि जातफुकारती ॥ मारुकं ।
सघुनदक्षमुखमाञकी नुविरैखडा ।
छमारती ॥ एकचंद्रावतगउजरीजगाइमै
मैयोयगईतंगरप्रारती ॥ ८ ॥ काहु
जी काहू जाति मनवुरो कंसको राज ।

123

दौ होंरा द्वारै नावत्तं ज्ञ: तुमकुं तै पकड़ा

उ,प्राज:॥ च तीज्ञा तै मैसंग सहेती करी

धेरकैं अडी,प्रकृती॥ ,प्रारामैप्रवहीज्ञा

य नततकार ती॥ सिरका चीरदियाउव

जमारे कादूत॥ मेरी चोती तो फारीहै

चौंतारकी॥ एव,जवासीका हाथोन

मेरी रत्नजारा उ,प्रारसी॥ ८॥ गुजरी

गुजरी मारी कंसपावदछाती वकृपांऽ

वै,प्रह रापति हा था। प्रार दो गर्व दंत
उपाड़.सी उपा कु दंत घड़ा उ चु ड़ा क
रु को त मा मी सै पूरा॥ प्रार दो वा जे क
र तूं प्यार की तेरी मु घरा कुं, प्रांघी मा सु
तेरे कंसा की कोन वहा रणी॥ कंसा
घो रैते सी मु सक चढा उ भी ख्जा मगा दु
घर घर वार की॥ एक वं द्रा व त गु जारी ऽ
क सी व त मै ते गार पुरा रसी॥ १०॥ गुज

री गुजरी सैमेत तेरे ता राज हमारे राम हीरा
मजि नराव नमारे ॥ हिरनाकुरा तेनम
नविदारे रामचंद्र लछमन की जोरी ॥
हनुमान जिन लंका तोडी ॥ तंकारा
जभमी वन दीनापुत्रों सजिन बीस वाप
हर कुंजारसी ॥ तकमाए जतीवाए ॥ १
सिर [illegible] जोता पायक सिर दंतालिंगा

रसी॥ एवं द्रावनगु नरी भभैनानही
देसी तंगरप्रारसी॥१२॥ काहाडी
काहाहमगुजर, प्रारदासतुहारे
तुमसीमताकेकसिरजनहारे ॐ
पाकरैनि सारेहमकुं॥, प्रपमोर
पच तुरभुजधारे॥ लगीपवनसि
रसालट्टसाताकभहरिस्यामक

श्री हरि वाता ॥ कह रामराय सुनप
तवाता पंचन मै ली ताती गावै कर
मुरार की ॥ हम हारी तुम जीते काह्न
दोनासेप की भेरी प्रारसी ॥ १३ ॥ इती
श्री प्रारसी संपूर्णं ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथगवलीला लिख्यते॥ राम॥ सतसंगातगुरज्ञान

सुनौसबकोंनदे॥ भजलेवोसीताराम

कामसबजानदे॥ विप्रएकजकनब्रह्म

ग्यानसुरभीप्रतिपाले॥ वच्छावाकेप

यैआयवालकबहुकाले॥ दूधदही

घ्रतआगारीबहुलावाकौनामेउठै

नाथनीतजीवहीदाधिभोजनबलो।

जाउ॥ सुनोसनकानदे॥ ५॥ चरनकुंज
वनजायसवननैआगेआवैं॥ वद्दामी
नलगायदूरनैसवृदसुनावें॥ कछु
कपटजानैनहीचलैसाधकीरीत॥ ता
नैममकुलउद्धरैदेवकरैपरतीत॥
सुनोसनकानदै॥ २॥ एकदिनाएक
न घेंआपकेवचनेसुनाई॥ चलौकुंज
वनमाहिजहांचारोंआधिकाइ॥

२ वरनतनकोउवरजहैंटीगहैसुंदरनाल
जोतुमकछुदुषपावहुहमकौंदीजो
गाल॥सुनोसतकानदे॥७॥एकदिन
वनगइ्जहांकेहरवनराजी॥सन
मुषदेष्योसिंहधेनकीसापनभाजी
वहुतदिनाभूषोभयोद्विरुच्याजिया
ननपाय॥आजमनोरथपरजिहोतु
ममलीमिलिहोंआय॥कहतनहसि २

127

हजी ॥४॥ देषवदनविकरालषेनमन
माहिरिसानी ॥ तुमरआपनैाधरमतु
रतवछामैंग्रानी ॥ मोहमगनलोचन
भरावछुपानकोदेह ॥ पूछमरोरैसीर
धुनैषेनस्वासनहीलेह ॥ पुत्र केलोच
नै ॥ प ॥ षेनकहैसुनसिंहसिंघनुम
सिंघनीजाये ॥ वछामेरैमनापग्रा
जमैनाहिचुषाये ॥ मैचुषायफिरिग्रा

२

यहोवाचा मोसौं लेहु ॥ आपने सुत पर
वारकैं देत आपनौ देह ॥ कहत नहुषे
नजी ॥ ६ ॥ सिंह कहै सुन धेन आपनौ
वलही सभारौ ॥ मोहि विधना भष।
दियौ कहा नैन न जल लुटारौं ॥ जो क
छु हृदय विचार हु कहि मो सौं सत
भाव ॥ जा की तोहि सहाय है कैयौ नाक
रैउपाय ॥ कहत नहै सिंघ जी ॥ ७ ॥ एक

२

महापगोपालकंमोरमैकाहसभाल मै
मौरिछकंकौनजहामैजापपुकाल
दीनवंधकवीरदावलीपतितनकीः
करपाल॥कोटिदेवरिलाहमेरीकि
पाकरैगोपाल॥कहतहैधेनजी॥८
सिंहकहैसुनधेनवचनमैकैसेमा
नौ॥कालिगहीछुटिजापवहुरने
रैनहीआनौ॥मैवनरापकहावं

५ हो जो मो पर छुटि जाय ॥ पांच सिंह हा
मी करै मेरी वाचा को न पत्याय ॥ क
है त है सिं ह जी ॥ ९ ॥ येन कहु मुनि सिं
ह कथाए क तो हि सुनाउ ॥ सुर नर तीसो
को दिसु नै तेरे मन भाउ ॥ वाचा ले घर
जा न दे आन मिलोगी तो हि ॥ एक कू
प दो पुरमे रे यही पराछन मो हि ॥ क
ह त है पे मु जी ॥ १० ॥ पति न पनोप

१२१

रहहैघेनुचरतीजोविडारे॥कूरीबो
लैसापकीतापरहापउभारे॥विसु
कनमानैनहीकुरपरवारविरोध॥औ
रपतिहीछाडिभोजनकेरैपहीपराछ
नमोहि॥कहनहेघेनजी॥१९॥विनि
पराधजोलरैसवनमोवेरवढावे॥
कलतीघोटदेवीलिजनमसवमोहि
गवावे॥सनुवचनतोतोकहोर

५ मुक्तावतहोतोहि॥आसनिरासजोक
रैयहीपराध्रुतमोहि॥कहनहेघेन
जी॥१२॥देहिविप्रकोंनोतिकेखिं
नाहिजीवावे॥कपातुनेदिनरैन
कलपचरविप्रपरजावे॥आसनिरा
साजोकरैरहैधरमकोपाय॥सोप्र
पराधमोकोलगोजोनामीलोगी
तोहि॥कहनहैघेनजी॥१३॥इतंर

नीसुनकैवातजबीकेहरपतिपा
नौ॥सुधालईतननमारबहुतपा
छैपछतानौ॥जोतुमसुरभीजा
नहोआतिपुनितसुखसाध॥तो
नकालफिरआपहोतोहमरो
अपराध॥कहैनहैसिंहजी॥बच
नप्रतितासोपिधनजबघरकौं
आइ॥पाइदेवैराहतीसपुनका

तिपछताई॥ बछराभतजवतुमो
६ ज्वैरैराभीगाय॥ पूछकांरखुरवाट
कैबछादिपेचोलोय॥ विप्रमनह
एष कै॥ १५॥ बछापानकराय।
औरपाडैघरपुरो॥ मननमैउपजी
सुरनधेनमनमाहिविसूरो॥ जा
उपुनचिरंजीरहोहमहैसंहस
हेटि॥ कैग्रवहोफिरआवाही।
६

कैसनतनकीभेटि॥ कहनै है पै तुजी॥
वह्यासाखिपवनमैंपिविसकौंदियोस
भारा॥ इतनीसुनसुजावातकूदिकर
भयेसप्रगारा॥ हमजाहेवनरायपतु
मवैठौघरजाये॥ जोसुतकौजनमा
वहीकैयोंजननैमेजीमाप॥ कहतहै
पुत्रजी॥ २०॥ जवववनरांभीगायजहा

८ केहरमगजोवै॥मनमैउपजौग्यानरे
विसुरभीमुवरोवै॥महापतितदुख
नाग्नानीग्रवमेरीग्रुरहोहु॥गपनै(
भालउवारलेगवनाछ्रीवोतोहि
कहरहै॥सिंहजी॥तुमसनवारवे
तो गउधरमकीसाचीमा॥जोग्रवतुम
कौभयोदंडमोहिदेहिविधाता॥हम

८

132

नवुलाई एकलीम्माई पुत्र समेत॥ ज
गन्यारन भानानु ही वऊेसत्य सोहेत
कह तहे सिंह जी॥ जाहु धेन धर ग्मा
पवेव छा भतियालो॥ सर नगहेकोल्म
जग्मा पुगेविरदसमालो॥ दरसपरस
कीरीतनेग्मंतरा उपजोजान॥ इतनीषु
निसुरलोकने ग्मापे ग्माभितविमान

८ सुरगहीलोकतै॥ हैबिदोउनकोसत
पारषतहरिकेआये॥ करिजोरेबेबड
गउकौंमिलनवाये॥ बलीमानवेहू
हकौंतुमओरसिंहसमेत॥ मायानभए
भगवानजीकियेतुमपरहेत॥ सत्यकू
देषिकै॥ १९॥ सिंहनछाडेबनीधेनछो
डेनहुजराजा॥ विमनछाडेगावगा

133

बनहीछाडैराजा॥सकलगएवैकुंठ

कैंजायैप्रभिनविमान॥परमप्रीतेर

रागकथागावैदासकल्यान॥सत्यज

गसारहै॥२०॥इतिश्रीकल्यानदासग

उलीलासंपूर्णम्॥श्रीरामजी॥अथ

दानलीलालिष्यते॥नंदसुतअरुवृष

भानंवरा॥सवैदिनसोहैविंद्रावन॥जवा

८ नीजोवनासुंदर॥बिलायेजुल्फबरा
आनन॥सकैरैगोपिकेलरको॥लइ
सबधेनुआगेधर॥मनुठीवासकीमु
रली॥बजातेहोमधुरतानन॥फिरा
होकेनकुंजनमे॥पहरगलमालफु
लनकी॥धरेसिरमोरकेपखवा॥बरो
बनबाछरूगायन॥डगरमेफगायो।
८

ग्वालन ॥ दहीलेजानहीवेचन ॥ गए
नववसांकरीपोलन ॥ करतगुलमस्त
ह्रोहासन ॥ ल षीजवग्वालनीग्वाल्ह
नीभ्रावत ॥ कैसेभूषणफणफणरु
ण ॥ सहेलीसहरकौभूमर ॥ ल षाजव
राधिकाहरन ॥ सवनकौपैरिहस
बोले ॥ चूकावोदानमोभावन ॥ गई

१० होवै विकै सवदीन ॥ दगा दे दे विमारी तु
म ॥ म गरड़ै मो जपाइ हो ॥ न छुटो विति
दियै दान न ॥ उगी हं सवौ लिए कग्वाल
न ॥ ववं देगाल होला लन ॥ कहा इन राय
पडै मै ॥ सुने नही दान दधि कान र ॥ न
हम पर वेप मोतिय न की ॥ नला दैला
लक्षो रही रा ॥ ना के सर सुलक की गा

ॐ॥मालादेजानहैदाषन॥सुपारीजा
यफलतोगे॥नामिसरीकंदनामेवा॥
माहछपरसेवनारंगी॥सदाफलष्मा
वनाजावन॥नामिलीमिलकसवा
मालत॥दराईवापनेमलमल॥नमा
लूचूदरीसोहै॥मालादेजानहैमाल
न॥कहोकिसिचीजकाहालल॥चूका

११ वैवाटिमैतुमकौं॥मगरभरिवेटिबा
पातैवनातानभटपटीवातन॥रसिले
लालउठिवोले॥स्कुलमोदानकाढ
उ॥मदापेजानहोवोरी॥निहारोगा
पनेजानन॥कहौतुमपरकहानाहि
मगरतुमनाटहोकाहेन॥वृनाइची
जजोतुमपर॥सभीतुमपासहैकामन

गारैतुमारैहारमुतियनका॥जुहीराला
लभ्राभूषन॥सनीतुमकंचुकीकेसर
लडीमुक्तानकीमागन॥तुमारेहाटहै
किसमिस॥दियेतुमभगेविदामन॥म
भीवेदामतुमकमोषया॥बिनापिसता
नमुसकानन॥जोमिसरीकंदतुमबा
तिमा॥सुपारीसेवनारंगी॥सदाफल

जापकलसोभा॥ नुमारीकुचरहीवनट
न॥ कुचनकेस्यामसुषतपर॥ कलकुल
वानलोगनकौं॥ कपोलनपरकवल
वाहू कलहूकंदनपिदावरनना॥ जोफि
लिमिलचोलियानुसरी॥ कसवमील
हनकेघपरे॥ जोफिलमिलवापकतो।
चादर॥ दराईलालसंजापकना॥ ढकी

स्यालू न उर से है॥ तुमारी खुन्नी सी॥ क
हु न न सू षके फे ना॥ रहि है पहर पाटं
वर॥ तु पात न जो श्री साफ नु॥ ले रावे
रूप की गाढी॥ भरो तु म षेप जीवन की
नवेली वेस के ठउ॥ किरत है प्रेम व
नजार न॥ करत है काम कामो दा॥
वहा ने देत है हासी॥ कटाछ ने पेट

लावनहो॥समोरै नैन कीहाटन॥चली।
१२ हो मारकै हासलम॥इनेपरदोल गावन
हो॥चूकावैा प्राजनिजदानन॥नजो
यहनेन मटिकावन॥प्रनोबेषेल।
भगटेनुम॥जगातीनंदकेघरमे॥ल
गावनदा.नहोदधिका॥कीरनहोघ
रताघाटन॥तजोप्रबीकरोमनह
१२

ट चूका वोदानसानी हो ॥ बनावोलाष
जो वेति या ॥ नाकु बहु पापहो जानन ॥
कहे गोपी सुनो मोहन ॥ भरदानीक
होकवेत ॥ करो नावाट हम वोटी हम
न कोपो हूं च नाधा मन ॥ मगर हम ना
हि हे ग्रे सी तु मन जेसी विचारी है ॥ ह
मन को दूर है जाना ॥ हमारे मन परा (

श्रीः

१४ ख्यालन॥ अगरतुमनाहहो॥ नचाव
ननैनहो। काहिन॥ कहनमुसकायके
वनिया॥ चलनमटिकायकैचालन
मलीनावातयेमोहन॥ परेहोख्या।
लजाकैतुम॥ वहानेदानगोरसके
फिरनहोप्रेमरसचाषन॥ मलीना।
वातयेमोहन॥ अठीलेनंदकेढो

टा॥ नआवतहैतुमैलाजन॥ गिवनपाह
नापमानहाथन॥ अगरपेवानसवतेरी
कहेगीकंससेजाकर॥ फिरैगादवक
नावनवन॥ अगरतुमभानतेनाही॥
कहुगीमायजसोधासे॥ दिवावैमार
तुमैवोदी॥ फिरैगालोटतापायन॥
हमारीसासमुनिपावै॥ हमनतुमनेह

कीवनिपा॥करैगी षारहमतुमकू
२५ विचारैमोवमैलालन॥चरावनगा
यछोडीहम॥करैहैवातुसवनैरी॥सुने
गेकेचनजेहमकू॥करैगेमोरहीव्या
हन॥सुनोरीग्वालनीवोरी॥कहाउर
मोहिदिषावनहो॥करैगाकेशवका
मेरा॥मगरचटिजाउगोवापे॥ववा

कीसोसुनोगीतुम॥लरोगाकंशसौं।
जाकर॥घसिटोगापकरकेशन॥पछ
रोगावडीवारन॥सुनोरीग्वालनीजो।
तुम॥कहोगोमायजसोधासू॥हराउ(
गातुमेह्वावी॥मरोगीअंततुमेलाज
न॥कहुगामायइनगोपियन॥करत
हलाउपगननेवर॥जवैमाईसक

लगैया॥ लगीहै चोकक करभाजन रहामुक
१६ तामनैकरकर॥ कहुयेजोवनामानी॥ न
ग्रावतनिकटमेरेनुम॥ सुनततरुणरुख
पगनघुघरू॥ लगीहैयापसवकापन
रहामुकतामनाकएकर॥ नमानीरूपकेस
धुमे॥ भजाईगायइनगोपिन॥ फिरामेठ
टनावनवन॥ आइजवघूमतीगजजो॥
गुमानीरूपकीनेर॥ गयोमेपासइन

गोपियन॥ उलाहने देन के कारन॥ मगर
जो ग्वाक हो तुम॥ कै हमपर दान मांग
त हो॥ कहुगा माय इन गोपिन॥ इये गुल
चामेरे गारन॥ तुनैगो मास जो तुमेरी
हमन तुमने हकी वतिया॥ निहारे वैस
मो वोरी॥ जिनैगी रूठ इन बातन॥ तुम्हा
रे कंथ जो त्यागे॥ सिखाउ मोहनी मंत
र॥ सकल वस होय जो तुमरे॥ करो जो ने

नसोसाघन॥ करतफगराहासीहासी॥ भ
८ इ॥ कोयलनवीरबालन॥ लगीजबके ह
नरसवतिपा॥ परमग्गसनेहउपजाव
न॥ सुनोजीकाननुमकारे॥ उजागर
पवतिहम॥ कहाकेसैमिलेहमनुम॥
नदेबोदिनमिलेरातन॥ नुमननसुस
कजोकारे॥ रहीहमअंगकेसरवन॥ व
नेनुमस्यामजैसोघन॥ रहीहमचम

कजोवामन॥तुमनपरकामरीकारी॥ह
मनपरसुरगपाटंबर॥तुमारेवासुरीहो
उन॥हमारेमुषभरेपानन॥तुमनेपरमा
लनकूलनकी॥हमनपरहारमुतिपून
का॥तुमनसिरमोरकेपषवा॥हमारेला
लनगभालन॥हमारीकुंचलगीकुंकु
म॥तुमारलानुगेपनकी॥हमारीमल
कहैघुघरवारी॥तुमारीजुलफहैना।

गन॥ हमारीएकहीमुंदरीसकलगैपानकी

किमन॥ वैनाहमनुमैसंयन॥ विचारोजो

वमैलालन॥ उनोरीहूपगरवीली॥ छवि

लीग्वालनीमुरष॥ करनहोस्यामएगनिं

दा॥ सराहनरंगहोजरदन॥ मगरजोकेस

तुमकारे॥ नहोवैकोतुमैपूछै॥ विनाधण

पुतरीस्याम॥ विनाकालेतिलननुमनै

लगैजोगेरूवाकपरे॥ ननककाजरवि

१८

न्नानु मरे ॥ लगे फिके सभी ग्रभरनु ॥ दिये
विनिमुरुक काविंदा ॥ नमो है घोर केसर (
की ॥ नग्गा वन वीजरी लोभा ॥ परै घनस्या
म विनि पायन ॥ परे जब मे घघाट वरनु (
मारे होय भिद रंगे ॥ पर नपा यनु करन हा
हा ॥ सभा रो का मरी ग्वालनु ॥ वजे जबवा
सुरी मोरी ॥ तुमारे पान फिके होय ॥ परै
वाहर निकम नमुघते ॥ रहि नु महा टमरिरा ।

१८ लन॥ तुमारे हार गल मुकता॥ हमारी मा
लफूलनकी॥ रहत है मह कै सब कालन
तुमारे लाल नग भालन॥ हमने सिर मोर
कै पषवा॥ फिरत है मोर छल परके बडे
राजानके मापन॥ तुमारी कुचलगी कु
मकुंम॥ पसीने वे गिव हजाइ॥ हम नक
उपमावारी॥ सदा कुंदन छिपे लानन॥
छतीसों भोग अोर इमरत॥ जगत मेहो

१८

तगेइयमननैं ॥ तुमारीमुदरीकरकीन ।
आवतहेकिसिकामन ॥ तुमनकुंउपमा
वाढीहमारीभोननै बैरी ॥ किंचारोरोमा ।
वजीसुआपन ॥ सकलगोपीजोअनवति
पा ॥ एहीलटकायकरगरदन ॥ जवीउ ।
नरदियोमोहन ॥ लगीतवहोगहीचा
टन ॥ कहीतवहारकेजाना ॥ नछुटो ।
विनिदियेदानन ॥ लगीतवबोलनेघु

१४०४-MS

घट दिषा पेरूपकेदरसन॥ निरषजवह

२० पगोपियनकाभरीजवनेहकीपालीकरी

हैग्वालनरुकसद॥ चलेहैसंगपहुचाव

न॥ लीयाहैदानमनभावन॥ सुननेदसह

दानदधिलीला॥ सुरगमैहोनहैवासा

गावतहै सूरहीदासा॥ इतिश्रीसूरद

सकृतदानलीलासंपूरणम॥ MS

1404-MS

२०